परमेश्वर का परिवार

(Family of God)

लेखक

डॉ० रामराज डेविड

आभार

सर्वप्रथम मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे अपनी बुद्धि और समझ प्रदान की कि मैं परमेश्वर का परिवार पर कुछ लिख सकूं। तत्पश्चात मैं अपने शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने मुझे इतनी गहनता से वचन की शिक्षा प्रदान किया। जिन्होंने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया। में उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक के लेखन, संशोधन, टाइपिंग, और अंतिम रुप देने में, मुझे सहयोग प्रदान किया। उन मित्रों का भी मैं आभारी हूं जिनका स्नेह और सहयोग मुझे हमेंशा मिलता रहा।

Creation Autonomous Academy

प्राक्कथन

वर्तमान समय के अनुसार सुसमाचार-प्रचार सही तरीके से नहीं हो पा रहा है। लोगों को उनकी अपनी संस्कृति के अनुसार सुसमाचार नहीं मिल पा रहा है। कलीसिया के सभी सदस्यगण सुसमाचार-प्रचार नहीं करते बल्कि कुछ गिने चुने प्रचारकों द्वारा ही सुसमाचार-प्रचार किया जा रहा है। आज आवश्यकता है कि कलीसिया के सभी सदस्यगण सुसमाचार-प्रचार करें। यह प्रभु की इच्छा है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम देखते हैं कि कलीसिया के सभी लोग जहां-जहां भी गए उन्होंने सुसमाचार प्रचार का कार्य किया। हम प्राथमिक कलीसिया की कार्य विधि का अनुसरण करें। भारत में पाश्चात्य विधि से नहीं बल्कि भारतीय विधि से सुसमाचार-प्रचार का कार्य किया जाना आवश्यक है।

सुसमाचार-प्रचार की भांति कलीसिया स्थापना का कार्य भी सही प्रकार से नहीं हो पा रहा है। इस कार्य में भी गिने चुने लोग ही लगे हुए हैं। कलीसिया स्थापना में भी अधिकांश लोग पाश्चात्य विधि का ही उपयोग कर रहे हैं। आवश्यकता है भारतीय संस्कृति के अनुसार भारतीय विधि उपयोग करने की, जिससे कलीसिया स्थापना का कार्य मौखिक संस्कृति के लोगों तक भी किया जा सके। कलीसिया स्थापना की गति धीमी है इसे तेज करने की आवश्यकता है। कलीसिया स्थापना का कार्य केवल शिक्षित लोगों तक ही सीमित न रह जाए। इसे व्यापक स्तर तक किया जाना चाहिए। सुसमाचार-प्रचार और कलीसिया स्थापना को अलग-अलग नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि इसे एक साथ जोड़कर किया जाना चाहिए। पहले सुसमाचार-प्रचार फिर कलीसिया स्थापना।

ऐसी स्थिति में इस विषय पर हिन्दी में सामग्री भी कम मात्रा में उपलब्ध है। यह अध्ययन इस बात पर ध्यान केन्द्रित करेगा कि किस प्रकार परिश्रम पूर्वक सही तरीके से सुसमाचार-प्रचार और कलीसिया स्थापना भारत में किया जाए।

‘ परमेश्वर का परिवार ’ नामक यह पुस्तक अनेक वर्षों के अध्ययन-अध्यापन के उपरान्त हिन्दी भाषी सुसमाचार-प्रचारकों एवं कलीसिया स्थापकों की आवश्यकता के अनुसार तैयार की गयी है।

यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए सरल, रोचक एव व्यवहारिक है। इसमें प्रत्येक पाठ को नमूने के साथ समझाया गया है। पुस्तक में उदाहरणों का समुचित प्रयोग किया गया है।

मेरी इच्छा है कि कलीसिया के सेवकगण एवं अगुवे इस पुस्तक से सहायता प्राप्त करें। सुसमाचार-प्रचार और कलीसिया स्थापना करने हेतु इस पुस्तक का उपयोग करें जिससे सम्पूर्ण भारत में सभी लोगों तक सुसमाचार-प्रचार पहुंच सके और मौखिक संस्कृति के लोगों के बीच भी कलीसिया स्थापना हो सके।

डॉ० रामराज डेविड

Creation Autonomous Academy

विषय सूची

प्राक्कथन 03

भूमिका 05

अध्याय : 1 सुसमाचार-प्रचार क्या है? 06

अध्याय : 2 सुसमाचार-प्रचार का तरीका 08

अध्याय : 3 सुसमाचार सुनाना 12

अध्याय : 4 सुसमाचार-प्रचार के रूप 14

अध्याय : 5 सुसमाचार-प्रचार में रुकावटें 18

अध्याय : 6 व्यक्तिगत सुसमाचार-प्रचार 20

अध्याय : 7 ग्रामीण सुसमाचार-प्रचार 31

अध्याय : 8 मौखिक सुसमाचार-प्रचार 39

अध्याय : 9 जनसमूह सुसमाचार-प्रचार 46

अध्याय : 10 परमेश्वर का परिवार की स्थापना 52

अध्याय : 11 परमेश्वर का परिवार की स्थापना की विधियां 54

अध्याय : 12 परमेश्वर का परिवार की स्थापना में रुकावटें 56

अध्याय : 13 उद्देश्य पूर्ण परमेश्वर का परिवार की स्थापित करें 57

अध्याय : 14 स्थानीय परमेश्वर का परिवार की स्थापना 61

अध्याय : 15 परमेश्वर का परिवार की उन्नति 64

अध्याय : 16 परमेश्वर का परिवार की वृद्धि की गति तेज करें 66

अध्याय : 17 स्थानीय परमेश्वर का परिवार की स्थापना की कार्यशैली 70

ग्रन्थावली-बिब्लियोग्राफी 73

Creation Autonomous Academy

भूमिका

सुसमाचार सुनाना ख्रिस्तीय कलीसिया के अस्तित्व का आधार है। मसीही जन के जीने का मतलब यह है कि वह दूसरों को सुसमाचार दें। पौलुस कहता है, 'यदि मैं सुसमाचार सुनाऊँ तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं, क्योंकि यह तो मेरे लिए अवश्य है; और यदि मैं सुसामाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय!' हम भी कह सकते हैं कि 'हम तो भारतीयों को सुसमाचार सुनाने के लिए तैयार हैं। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए------उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।' कलीसिया की सेवा में पास्तरीय तथा सुसमाचार-प्रचार कार्य शामिल है।

आज सुसमाचार-प्रचार और कलीसिया स्थापना का कार्य का दायित्व बड़ी सबलता के साथ भारतीय कलीसिया के कंधों पर आ गया है। पिछले दो दशकों से सुसमाचार-प्रचार ने तेज प्रगति किया है। यद्यपि दो सौ वर्षों से मिशनों और बाहरी कलीसियाओं ने हमारे देश में कार्य किया। मसीह की कलीसिया सार्वभौमिक है। परन्तु भारत की कलीसिया को अपने आप पर निर्भर रहने वाली और अपने आप गवाही देने वाली कलीसिया होना चहिए। इसलिए सुसमाचार-प्रचार कलीसिया स्थापना और पास्तरीय कार्य अब प्रायः भारत में भारतीय कलीसिया की जिम्मेवारी है। इस चुनौती का सामना करने के लिए अनेक कोशिशें की जा रही हैं। सबसे बुनियादी और महत्वपूर्ण कार्य है सुसमाचार-प्रचार।

इन वर्तमान वर्षों में कलीसिया-स्थापना आन्दोलन भारत में उभर रहा है जिसके लिए हम परमेश्वर के धन्यवादी हैं। परिणामस्वरूप देश के अन्दर हजारों-हजार कलीसियाओं की स्थापना हुई है और सैकड़ों कलीसियाएँ स्थापना की अवस्था में हैं। जो वर्षों-वर्षों की मेहनत से आत्माओं की फसल के रूप में तैयार हैं। बढ़ ते विश्वासियों की संख्या और बढ़ती हुई कलीसिया की संख्या ने इस आवश्यकता को रेखांकित किया है कि सुसमाचार-प्रचारकों व कलीसिया स्थापकों को सही सामग्री और सही प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाय। भारी मात्रा में सुसमाचार-प्रचारक एवं कलीसिया स्थापक तैयार किए जाए।

भारत की बहुसंख्या अभी भी शैतान के चंगुल में जकड़ी हुई है। विशाल भारतीय ग्रामीण आबादी को अभी भी सुसमाचार सुनाने की आवश्यकता है। भारत की बहुत सी ऐसी जातियाँ हैं जिन्होंने अभी तक प्रभु का सुसमाचार नहीं सुना है। तीर्थ यात्राओं की लम्बी-लम्बी कतारों को देखकर पता चल जाता है कि लोग उद्धार की तलाश के लिए लगे हैं। उद्धार पाने की तीव्र प्यास लोगों में है। लेकिन शैतान ने मानव की आखों को बन्द कर रखा है जिसे खोलने की आवश्यकता है। आत्मिक अंधेपन को दूर करने का और शैतान के चंगुल से छुड़ाने का उपाय है सुसमाचार-प्रचार एंव उन बचे फलों को सुरक्षित रखने का उपाय है कलीसिया स्थापना और पास्तरीय सेवकाई।

Creation Autonomous Academy

आइए, हम सब अपने आप को बुनियादी कार्य के प्रति समर्पित करें और सुसमाचार-प्रचार के कार्य में लग जाएँ। सुसमाचार-प्रचार के परिणामस्वरूप प्राप्त फलों को सुरक्षित करने में लग जाएँ।

अध्याय -1

सुसमाचार-प्रचार क्या है?

सुसमाचार-प्रचार के बारे में जानने से पहले आवश्यक है कि हम सुसमाचार के बारे में जानें।

1- सुसमाचारः-

प्रभु यीशु के शब्दों में सुसमाचार का सार है, “परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” (यूहन्ना 3:16)

क्या विश्वास करें? “यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मारा गया,गाड़ा गया और तीसरे दिन जी उठा।” (1 कुरि० 15:1-4)

“परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उसने मेल-मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।” (2 कुरि० 5:17-19)

परमेश्वर प्रेम से मनुष्य की सहायता करता और पापी का उद्धार करता है। परमेश्वर है, वह सृष्टिकर्ता है, प्रेमवश ही उसने सृष्टि की रचना की।

सुसमाचार-प्रचार कार्य में प्रचारक कड़ाई और साहस के साथ मनुष्य जाति का पाप दिखाता है। पाप पर न्यायदण्ड की घोषणा करता है और बताता है कि परमेश्वर न्यायी है अपितु परमेश्वर पापी के नष्ट होने से प्रसन्न नहीं होता है। सुसमाचार-प्रचार में प्रेम की सेवा है।

सुसमाचार में मेल-मिलाप है। यह एक नये संसार अर्थात् परमेश्वर के राज्य की स्थापना का सुसमाचार है।

2- सुसमाचार सभी समयों के सभी लोगों के लिए हैः-

1 : परमेश्वर का सुसमाचार है। (रोमि० 1:1)

2 : यीशु मसीह का सुसमाचार है। (मर० 1:1)

3 : लोगों के उद्धार का सुसमाचार है। (इफि० 1:13)

4 : शांति का सुसमाचार है। (इफि० 6:15)

5 : जीवन का सुसमाचार है। (यूहन्ना 3:16;10:10)

6 : आनन्द का सुसमाचार है। (लूका 2:10-11)

3- सुसमाचार-प्रचारः-

सुसमाचार-प्रचार में प्रचारक प्रभु के मेल-मिलाप के सुसमाचार का प्रचार करता है। मेल-मिलाप के सन्देश को दूसरों तक पहुँचाता है। वह बताता है कि परमेश्वर सृष्टिकर्ता है और वह हमसे प्रेम करता

है। कड़ाई के साथ और साहस के साथ मानवजाति का पाप दिखाता है। न्यायदण्ड की घोषणा करता है। वह यह भी बताता है कि परमेश्वर पापी के नष्ट होने से प्रसन्न नहीं होता। (यशा० 55:6-7)

सुसमाचार-प्रचार एक अनुभव है और उस अनुभव को प्रकट करना है। इसमें सब भाग ले सकते हैं और सबको भाग लेना चहिए। जिसको लगन होगी वह सुसमाचार प्रचार करेगा और प्रभु यीशु के समान प्रचार और त्याग करेगा। (प्रेरितों० 26:16-18)

4- सुसमाचार-प्रचार का अधिकारः-

प्रभु यीशु का आदेश हमें सुसमाचार प्रचार के लिए अधिकार देता है। उसने आदेश दिया ,'जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और जो-जो आज्ञाएँ मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ।' (मत्ती 28:19-20) यह आज्ञा न केवल बारह चेलों के लिए थी परन्तु सब समय की कलीसिया के लिए है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में दूसरों ने शिष्यों को प्रचार करने के लिए रोक लगाया। शिष्यों ने बड़ी दृढता से कहा, 'तुम ही न्याय करो कि क्या परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें?' (प्रेरितों ० 4:18-20)। यीशु ने कई बार शिष्यों को ऐसा आदेश दिया कि जाओ और प्रचार करो। यूहन्ना 20:1 में उसने कहा, 'जैसा पिता ने मुझे भेजा है वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।

Creation Autonomous Academy

अध्याय - 2

सुसमाचार-प्रचार का तरीका

प्रभु यीशु ने जो कुछ सिखाया या किया, सब इसी अभिप्राय से था कि संसार का उद्धार हो। इसी कारण सुसमाचार-प्रचार के तरीके का अभ्यास करते हुए हमें सीखना है कि मुक्तिदाता ने अपने अभिप्राय को पूरा करने में किस प्रकार सेवा की। सुसमाचार-प्रचार का तरीका सीखने के लिए प्रभु यीशु के जीवन और सेवा के तरीके को व्यवहार में लाना उचित है।

1- आरम्भ ही से तैयारीः-

प्रभु यीशु मसीह ने आरम्भ ही से तैयारी किया।

(क) वचन को अध्ययन, मनन, स्मरण एवं अपने जीवन में उपयोग कियाः-

बचपन से ही धर्मशास्त्र के वचनों का अध्ययन किया, मनन किया, याद किया और उसे अपने जीवन में उपयोग किया। यीशु ने बारह वर्ष की अवस्था में उपदेशकों से बात-चीत किया। “और ऐसा हुआ कि तीन दिन के पश्चात् उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के मध्य बैठे, उनकी बातें सुनते और उनसे प्रश्न करते पाया। और सब लोग जो उनकी सुन रहे थे उसकी समझ और उसके उत्तरों को सुनकर दंग रह गए। (लूका 2 : 46-47)

(ख) अपने को जनसमूह से मिलायाः- उसने पर्वों, उत्सवों, आराधना सभाओं आदि में शामिल होकर अपने को जनसमूह से मिलाया। “फिर ऐसा हुआ कि सब्त के दिन ----वह फरीसियों के किसी अधिकारी के घर रोटी खाने गया----।” (लूका 14:1)

(ग) एकान्त में जाकर मन को तैयार कियाः- एकांत में वह परमेश्वर से मिलता था, उसके वचन आवाज को सुनता था।

(घ) स्वयं को जीवन-लक्ष्य के लिए तैयार कियाः- बपतिस्मा के बाद 40 दिन जंगल में बिताए और अपने को जीवन-लक्ष्य के लिए तैयार किया।

2- जनसमूह और व्यक्तियों से संपर्कः-

तैयारी करने के बाद यीशु ने जनसमूह और व्यक्तियों से सम्पर्क किया। वह उनसे मिला, उनमें चला फिरा। उसने परमेश्वर का वचन उनके समक्ष रखा। जिस प्रकार से प्रभु ने जनसमूह के साथ व्यवहार किया और उनकी सेवा की वह हमारे लिए नमूना है। जिस प्रकार से व्यक्तिगत वार्ता के द्वारा

लोगों को वचन सुनाया उससे हम सीखते हैं कि प्रभु ने किस प्रकार, किस पद्धति से अपने समय के लोगों की सेवा की और लोगों को सुसमाचार सुनाया ।

3- सेवा के लिए लोगों को चुनाः-

वचन प्रचार के साथ ही साथ प्रभु यीशु ने कुछ लोगों को इस सेवा के लिए चुन लिया, इसलिए कि जब वह अपने पिता के पास लौट जाएगा तब ये शिष्य उसके कार्य को चालू रख सकेंगे । चुने हुए लोगों के द्वारा वह संसार को परमेश्वर की ओर खींचेगा। उसका तरीका मनुष्य थे जिनको वह काम में लाएगा। साधारण कामकाजी मनुष्यों द्वारा उसका राज्य फैलेगा। (यशा० 4:6) इन मनुष्यों में प्रभु का आत्मा भर जायेगा और तब ये साधारण कामकाजी मनुष्य इस संसार को परिवर्तित करने वाले बनेंगे।

4- चुने हुओं को प्रशिक्षित कियाः -

यीशु ने शिष्यों को चुना। उनको अपने साथ रखा कि वे उसका रहन-सहन तथा समय का उपयोग सीखें। शिष्य उसका जीवन (प्रेम, बलिदान की आत्मा आदि) अपने जीवन में ले सकें।

इसके साथ ही प्रभु ने उनको सेवा करके दिखाया और उनको प्रचार सेवा के लिए भेजकर उन सब को, जो उन्होंने देखा था, कार्यरूप देना सिखाया।

प्रभु यीशु ने बड़ी संख्या में लोगों को नहीं चुना। प्रभु जानते थे कि जब तक थोड़े से लोगों पर शिक्षा का असर न हो, तब तक संसार पर इसका असर नहीं हो सकता है। जब तक थोड़े से लोग प्रभु के साथ रहकर न सीखें तो वे संसार को नहीं सिखा सकते हैं।

5- अपने को जनता के साथ मिलायाः-

Creation Autonomous Academy

शिष्यों के चुनाव को देखते हुए यह न सोचें कि प्रभु ने जनता को छोड़ दिया था। सुसमाचारों के अध्ययन से पता चलता है कि उसने जनता के साथ अपने को मिलाया। वह जनता में घुला-मिला। (मत्ती 3:13-16, मर० 6:31, यूहन्ना 12:19, लूका 20:19)।

प्रभु ने भीड़ में से थोड़े लोगों को चुनकर उनमें अपनी शिक्षा और आत्मा का पूरा प्रभाव डालने का तरीका अपनाया।

आज भी यदि मंडली का कार्य किया जाना है, प्रभु की आज्ञा का पालन करना है, सुसमाचार और उसके संदेश से संसार को परिचित कराना है तो थोड़े से लोगों को लेकर उनको पूरी रीति से शिक्षा देकर तैयार करना सबसे अधिक कार्यकारी तरीका है, जिससे ये लोग भीड़ के आगे सुसमाचार-प्रचार कर सकें।

6- शिष्यों को अपनी संगति में रखाः-

प्रभु यीशु ने शिष्यों को चुना और उनको शिक्षा दे कर प्रचार सेवा के लिए नियुक्त किया। प्रभु ने शिष्यों को तीन वर्ष तक अपने साथ रखा जिससे कि उसकी सेवा आत्मा, सेवा का जीवन शिष्यों में भर जाए। प्रभु यीशु की आत्मा, त्याग, बलिदान की आत्मा थी। प्रभु यीशु का जीवन देने वाला जीवन था। प्रचार कार्य सेवा की मुख्य आत्मा यही है। प्रभु यीशु ने शिष्यों को अपनी संगति में रखा कि शिष्य इसे सीखें।

7- प्रचार सेवा के लिए शिष्यों को बुलायाः -

प्रभु यीशु ने प्रचार सेवा के लिए शिष्यों को बुलाया। शिष्यों ने बुलाहट का अनुभव किया।

प्रचारक के जीवन में इस बात का अनुभव होना चाहिए कि प्रभु ने उसे चुना और प्रचार सेवा के लिए उसे बुलाया है। फिर उसे प्रभु का जीवन और आत्मा मिलने का अनुभव और निश्चय होने चाहिए। इसी के द्वारा सुसमाचार प्रचारक की आत्मा परमेश्वर के प्रेम से प्रज्वलित रहेगी।

8- प्रभु के जीवन से एकीकरणः -

प्रचारक का जीवन प्रभु यीशु के जीवन से पूर्ण एकीकृत हो।

'परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।' पिता ने सब कुछ दे दिया। पुत्र ने भी सब कुछ दे डाला- अपनी महिमा, अपनी शांति, अपना आनन्द, अपना प्राण दे दिया। (गला० 1:4,2:20, इफि० 5:25, 1तीमु० 2:5, तीतुस 2:14)। शिष्यों को भी यही बात न केवल सिद्धान्त रूप में वरन व्यवहार में भी सीखना था। प्रभु यीशु के जीवन से उन्हें अपने जीवन को एकीकरण करना था।

Creation Autonomous Academy

9- अपने को अर्पण करने का नमूनाः-

यीशु ने दूसरों की सेवा में अपने को अर्पण करने का नमूना दिया। शिष्यों ने देखा कि यीशु किस प्रकार सारा दिन रोगियों की सेवा करता था, शोकितों के शोक को दूर करता था और जो निर्धन थे उनको सुसमाचार सुनाता था। वह दिन भर काम करता और रात में एकान्त में समय व्यतीत करता था। प्रभु यीशु के जीवन का महान नमूना उनको देखने को मिला- दूसरों की सेवा में अपने को अर्पण करने का नमूना।

10- प्रचार सेवा की जाँचः-

प्रचार सेवा की जाँच करना भी आवश्यक है। प्रचार सेवा की जाँच या नाप अपने को प्रभु यीशु के सामने रखने से ही हो सकती है। जैसा प्रभु ने प्यार किया, वैसा ही प्यार हमें भी करना है। (यूहन्ना 13:14,34) जैसे प्रभु ने कुछ न रख छोड़ा, अपना सब कुछ दे दिया, वैसा ही हमें भी देना है। (मत्ती 10:8) शिष्य होने का यही चिन्ह प्रभु ने दिया है, 'मेरे प्रेम में बने रहो।' (यूहन्ना 15:9) एक दूसरे को प्रेम करने की आज्ञा प्रभु ने दी है। (यूहन्ना 15:12) पड़ोसियों से प्रेम करना व्यवस्था का सार है। (मत्ती 22:40) बलिदानी प्रेम- यही सेवा की जाँच और नाप है ।

11- प्रार्थना और वचन उपयोगः-

प्रचार सेवा के लिए प्रार्थना और वचन का उपयोग करना चहिए।

प्रचार सेवा की शिक्षा यीशु ने अपने शिष्यों को अपने जीवन का उदाहरण देकर दी थी। इसके साथ ही उसने यह भी दिखलाया कि प्रचार सेवा में प्रार्थना और धर्मशास्त्र का कैसा उपयोग करना चहिए। प्रभु के प्रार्थना के जीवन का अभ्यास करने से हम देख सकते हैं कि उसने प्रार्थना को कितना बड़ा स्थान दिया था।

प्रभु के शिष्यों ने प्रार्थना करना अपने आप नहीं सीखा, न ही वे इस भेद को जानते थे कि प्रभु रात भर किस विषय पर प्रार्थना करता है। प्रभु यीशु ने शिष्यों को प्रार्थना करने के लिए विवश नहीं किया परन्तु अपने जीवन से इसे करके दिखाया। (लूका 11:1, 3:21, 6:12, 9:19) प्रभु यीशु ने अपने जीवन से यह नमूना उन्हें दिखाया था कि प्रार्थना बिना जीवन में कोई कार्य परमेश्वर के लिए सफलतापूर्वक नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार शिष्यों ने सीखा कि उन्हें भी इसी प्रकार प्रार्थना के जीवन पर निर्भर होना है।

धर्मशास्त्र का उपयोगः-

जो प्रभु ने शिष्यों को देखने का अवसर दिया । प्रभु के उपदेशों में पुराने नियम के हवाले बारम्बार दिए गए हैं । धर्मशास्त्र प्रभु का भोजन था। (मत्ती 4:4) परीक्षा के समय उसी के द्वारा विजय मिली । (मत्ती 4:4-7) उसी से वह लोगों को शिक्षा देता था, चाहे घर में, मन्दिर में, या खुले मैदान में। उसके उपदेश में पुराने नियम के हवाले भरे रहते थे। पूरा धर्मशास्त्र मानो उसे याद था।

Creation Autonomous Academy

प्रार्थना का नमूना, धर्मशास्त्र के उपयोग का नमूना, यह सब प्रभु ने शिष्यों को क्यों दिया? इसलिए कि शिष्य लोग उस समय और भविष्य में यह जानें कि प्रचार कार्य में इनका उपयोग कैसा होना चहिए। प्रभु यीशु के सब काम और उपदेश इसीलिए किए गए थे कि लोग परमेश्वर की ओर फिरें। प्रचार कार्य यही है। आत्माओं के जीतने वाले महान गुरू ने जब यह तरीका अपनाया है तो हम लोगों को भी नमूना लेना है। प्रभु के नमूने लेना है। प्रभु के नमूने को सीखना व उसे अपनाना है।

अध्याय - 3

सुसमाचार सुनाना

महान ईश्वरीय सन्देश को लोगों को कैसे सुनाया जाए। सुसमाचार सुनाने में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक हैः-

1- पूर्ण विश्वास एवं निश्चयः-

सुसमाचार सुनाने में हिचकिचाहट अथवा संदेह कभी नहीं प्रकट होना चहिए। यह पूरे विश्वास और पूरे निश्चय के साथ कहा जाए। बड़े विश्वास और बड़े निश्चय के साथ सुसमाचार सुनाना है। ऐसा सुनाएँ कि आपने सब कुछ स्वयं पूरी रीति से अनुभव किया है ।

कभी-कभी बड़े लोगों के आगे, विद्वानों के आगे बोलने में भय लगता है कि लोग क्या सोचेंगे अथवा क्या कहेंगे। परन्तु याद रहे कि प्रभु के साधारण शिष्यों ने निश्चयपूर्वक बोलने से सदा प्रभाव डाला।

जितना निश्चय से हम सुना सकेंगे उतना ही हम दूसरों का विश्वास प्रभु पर टिका सकेंगे।

2- किसी के धर्म एवं विश्वास का खण्डन न करेंः-

सुसमाचार-प्रचार में किसी के धर्म और विश्वास का कोई खण्डन न हो। खण्डन-मण्डन से बचें। शास्त्रार्थ में हो सकता है कि आप किसी को हरा दें। परन्तु इससे कोई लाभ न होगा। हमारा काम किसी का खण्डन करना नहीं है। हमारा काम अपनी गवाही द्वारा व्यक्ति को प्रभु से मिलाना है। अपने विश्वास को लोगों को नम्रतापूर्वक बताना है। विश्वास के विषय में कोई पूछे तो उत्तर देने के लिए सदा तैयार रहें। हमें स्वयं बहस छेड़ना नहीं है परन्तु बहस से घबराना नहीं है।

3- स्थानीय कहानियों और दृष्टान्तों का उपयोगः-

सुसमाचार-प्रचार में प्रभु यीशु का नमूना ग्रहण करें। कोशिश करें कि गाँव के लोग गाँव की दशा और कहानियों में प्रभु का सन्देश को सुन सकें। सुसमाचार सुनाने में कहानियों और दृष्टान्तों का उपयोग करें।

4- उत्साह एवं जोश के साथ सुनाएँः-

सुसमाचार-प्रचार उत्साह एवं जोश के साथ सुनाया जाये। उत्साह एवं जोश के साथ सुनाये गये सुसमाचार का लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। सत्य को उत्साह के साथ बोलने से लोग जान जाते हैं कि बोलने वाला स्वयं उस सत्य पर विश्वास करता है जिसको समझा रहा है।

पौलुस का उदाहरण लीजिए। ज्यों ही उसने प्रभु पर विश्वास किया और बपतिस्मा लिया वह तुरन्त सभाओं में यीशु का प्रचार करने लगा। (प्रेरितों० 9:20) वह निर्भीकतापूर्वक प्रभु का प्रचार करता था (प्रेरितों० 9:29) वह न केवल थोड़े समय के लिए परन्तु जीवन भर ऐसे ही उत्साह के साथ कार्य करता रहा।

5- प्रेमपूर्वक सुनाएँः-

सुसमाचार-प्रचार में इस बात का ध्यान रखना चहिए कि मन का प्रेम बोली और व्यवहार में भी झलकता है। यदि ऐसा नहीं है तो प्रचार असरहीन हो जाता है। प्रेम के बलिदान की चर्चा, छुटकारे की चर्चा प्रेम भरे शब्दों और प्रेम भरी आत्मा से करें।

6- श्रोता के समान दिखेंः-

प्रचार में यह भावना नहीं आनी चाहिए कि प्रचारक श्रोता से उच्च श्रेणी का है। इस रूप में और इस भावना से, ऐसे शब्दों में प्रचार हो कि सुनने वाला विश्वास कर सके कि हम उसको पूरी रीति से प्यार करते हैं और जैसी उसकी दशा है, वैसी प्रचारक की भी थी जो आज प्रचार कर रहा है। दोनों में समानता होने पर ही दोनों का संपर्क हो सकेगा और सुनाए हुए वचन को काम करने का अवसर मिल सकेगा।

7- साफ आवाजः-

सत्य वचन, जो जीवन का वचन है, सुनाने में बड़ा निश्चय, हर्ष और उत्साह होता है, तब आवाज में सफाई होती है, मधुरता होती है।

8- मधुर आवाजः-

सुसमाचार मधुर आवाज में सुनाया जाना चाहिए क्योंकि यह प्रेम और मेल का सुसमाचार है।

9- चेहरे पर चमकः-

Creation Autonomous Academy

सुसमाचार-प्रचार में प्रचारक के मुख पर ऐसी ज्योंति होनी चाहिए जैसी मूसा के चेहरे पर थी जब वह सीनै पहाड़ पर से उतरा था।

अध्याय -4

सुसमाचार प्रचार के रूप

सुसमाचार प्रचार भिन्न-भिन्न रूप से किया जा रहा है। नित नये-नये रूप सामने आ रहे हैं। सभी देश अपने देश की स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार नये-नये रूप की खोज कर रहे हैं और उनका उपयोग कर रहे हैं।

निम्नलिखित रूप में सुसमाचार प्रचार किया जा रहा हैः--

1- सामूहिक प्रचार
2- बाल-प्रचार
3- साहित्य प्रचार
4- आकाशवाणी प्रचार
5- कारखाना या उद्योग प्रचार
6- घर-घर गली-गली प्रचार
7- संगीत प्रचार
8- नाटक प्रचार
9- चलचित्र प्रचार
10- मुलाकात प्रचार
11- व्यक्तिगत प्रचार
12- ग्रामीण प्रचार
13- मौखिक प्रचार

1- सामूहिक प्रचारः-

इस प्रकार के प्रचार में निम्नलिखित कार्य किए जाते हैंः-

क- आधुनिक संचार साधनों द्वारा लोगों को खबर पहुँचाई जाती है।
ख- प्रार्थना एवं प्रबंध में स्थानीय अगुवों का सहयोग लिया जाता है।
ग- कार्यकर्ताओं और वाहनों हेतु कलीसिया, स्कूलों एवं संस्थाओं की सहायता ली जाती है जिससे कि दूर-दूर से लोग लाए जा सकें।
घ- सभा में लाऊड स्पीकर, बिजली बत्ती, शामियाना एवं अलग-अलग कमरों का प्रबन्ध होता है, जहां लोगों को अलग-अलग समझाया जा सके और उनके निजी मामलों में मदद की जा सके।

च- जो सहायता चाहते हैं उनसे कार्ड भरवा लिए जाते हैं कि आगे भी उनकी सहायता की जा सके। उस व्यक्ति की सहायता स्थानीय पास्टर या कलीसिया का सेवक कर सकता है। जहां वह व्यक्ति रहता है। फॉलोअप का काम स्थानीय स्तर पर किया जाता है।

छ- छपे हुए छोटे -छोटे परचे उन तक पहुँचाए जाते हैं जिससे आत्मिक जीवन में उन्नति करने में उनकी सहायता हो सके।

सामूहिक या व्यापक प्रचार कार्य के पहिले कई महिनों से कलीसिया के अगुवों और प्रचार प्रेमियों को प्रार्थना और बाइबल अध्ययन के द्वारा तैयार किया जाता है। जो लोग खोजियों की सहायता करना चाहते हैं उनको विशेष रूप से बाइबल के पाठ अध्ययन हेतु दिए जाते हैं। इस प्रकार न केवल नगर के, परन्तु पूरे क्षेत्र के लोगों का जोश इस काम में बढ़ाया जाता है।

2- बाल प्रचारः-

इस प्रचार में अनेक साधनों का प्रयोग कर बच्चों को प्रचार किया जाता हैः-

क- चित्रों और फ्लेनेलग्राफ द्वारा प्रचार किया जाता है।

ख- कठपुतलियों के द्वारा बाइबल की कहानियां बतायी जाती हैं।

ग- मेमोरी कार्ड द्वारा बाइबल के पद याद कराये जाते हैं।

घ- छुट्टियों में बाइबल पढ़ाने के कार्यक्रम की व्यवस्था की जाती है।

च- गर्मी या सर्दी की छुटिट्यों में कहीं अच्छी जगह कैम्प लगाकर बाइबल की शिक्षा दी जाती है।

छ- बच्चों से नाटक कराए जाते हैं और परमेश्वर व वचन के प्रति उनका जोश उभारा जाता है।

3- साहित्य प्रचारः-

इस प्रचार कार्य में निम्नलिखित कार्य किए जाते हैंः-

(क) ट्रेक्ट और पुस्तकों का वितरण किया जाता है।

(ख) परचे, पुस्तकें, बाइबल आदि मेले अथवा प्रदर्शनी में दूकान लगाकर या चलते रास्ते बांटना व बेचना।

Creation Autonomous Academy

(ग) वाहन में पुस्तकें और परचे भरकर जगह-जगह जाकर बांटना व बेचना।

(घ) शहरों और बड़े-बड़े कस्बों में पुस्तकालय खोलना।

(च) कारेस्पॉडेंस कोर्स चलाना।

4- रेडियो द्वारा प्रचारः-

इस प्रकार के कार्य में प्रोग्राम रिकार्ड कर रेडियो पर प्रसारित किए जाते हैं। इसमें ये बातें जरूरी हैंः-

(क) अच्छे बाजे, बजाने व गाने वाले। तैयारी के साथ गीत बजाएं व गाएं।

(ख) विशेष जन बड़ी तैयारी के साथ बाइबल की शिक्षा ऐसे विषयों पर, जो लोगों के जीवन पर लागू हैं, बराबर दिया करें।

(ग) सदा कुछ देने का प्रबन्ध हो, कैलेन्डर, पुस्तक इत्यादि। इसमें श्रोतागण पत्र लिखते हैं, पत्रों का उत्तर समझ के साथ दिया जाए। जो पुस्तक आदि देने की प्रतिज्ञा है वह तुरन्त भेजी जाए।

(घ) समय-समय पर उनसे मिलने का प्रबन्ध हो जो सुनते हैं, पत्र लिखते हैं और जो पुस्तकें भेजी गयीं उन्हें पढ़ते हैं।

5- कारखाना प्रचारः-

हजारों लोग अपने गांव, घरों से काम करने के लिए बड़े शहर में आते हैं। उनमें से अधिकांश लोग छोटे-छोटे घरों में रहते हैं। अकेले, बीमार, थके, परेशान होते हैं। ऐसे समय लोग चाहते हैं कि कोई प्रेम से उनसे बातें करे। घर पर किसी आयोजन में उन्हें बुलाएं। बीमारी में सहायता करें, दुःख में शांति के वचन पढ़कर सुनाएं। यह जरूरी नहीं कि हर समय बाइबल का प्रचार किया जाए। परन्तु समय पड़ने पर उचित रूप से सहायता की जाए।

इसमें ये बातें आवश्यक हैंः-

(क) जहाँ-जहाँ कारखाने के लोग रहते हैं वहाँ जाकर पूरा पता लगाना कि कितने लोग रहते हैं, कैसे घरों में रहते हैं, बच्चों के पढ़ने का क्या प्रबन्ध है आदि। कभी-कभी वहाँ जाकर सभी से मुलाकात करना है। जब लोग घरों पर हों तभी दो लोगों को एक संग जाना चाहिए।

(ख) हर प्रकार से सहायता का मन रखना।

(ग) व्यक्तिगत रूप से अधिक मिलें। इससे सबकी दशा का पता रहेगा और उनकी सहायता प्रार्थना तथा बाइबल पढ़ने से हो सकेगी।

(घ) मुसीबत वाले के साथ खास हमदर्दी करना है। समय और हालत को समझकर जो कर सकें, वह करना चहिए।

6- घर-घर गली-गली प्रचारः-

इस प्रचार में प्रत्येक घर में जाते हैं, बैठते हैं, बातचीत करते हुए सुसमाचार सुनाते हैं और वहाँ कोई परचा या पुस्तक छोड़ देते हैं। थोड़े समय बाद उस घर में फिर जाते हैं कि विश्वास में क्या प्रगति हुई है। अकेला जन कभी नहीं जाता है। कोशिश यह होती है कि दो जन साथ-साथ काम करें। बड़ी प्रार्थना और तैयारी के साथ यह काम किया जाता है।

Creation Autonomous Academy

7- संगीत प्रचारः-

यह व्यक्तिगत नहीं होता है परन्तु बड़े-बड़े सम्मेलनों और समूहों में होता है। गाने का बड़ा प्रभाव होता है।

8- नाटक प्रचारः-

कोरे शाब्दिक प्रचार से ड्रामा द्वारा प्रचार का अधिक असर होता है। पुराना नियम की कहानियों को और नया नियम के दृष्टांतों को ड्रामा रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। साथ में गाना बजाना भी हो सकता है।

9- चलचित्र प्रचारः-

फिल्मों के बनाने और दिखाने का साधन अत्यन्त प्रभावशाली है। फिल्म दिखाकर मुहल्ले-मुहल्ले, कस्बे-कस्बे, गाँव-गाँव, सुसमाचार प्रचार किया जाता है।

10- मुलाकात प्रचारः-

पास्टर कलीसिया के सदस्यों के छोटे-छोटे झुण्ड तैयार करता है। वह उनका उत्साह बढ़ाता है, उनको भेंट या मुलाकात के लिए घर-घर भेजता है कि वे मुक्ति का संदेश दें।

11- व्यक्तिगत प्रचारः-

इस प्रकार के प्रचार कार्य में एक व्यक्ति एक व्यक्ति से मिलता है । उसे सुसमाचार सुनाता है। उसे प्रभु से मिलाता है।

12- ग्रामीण प्रचारः-

भारत की अधिकांश आबादी गाँवों में रहती है जो अशिक्षित है। ऐसे लोगों तक सुसमाचार पहुँचाने का कार्य ग्रामीण प्रचार कार्य है। इसके लिए ग्रामीण लोगों के पास पहुँचना और इनकी जीवन स्थितियों में, इनकी भाषा में सुसमाचार सुनाना होता है। यह अत्यन्त कठोर परिश्रम का कार्य है। परन्तु भारतवर्ष में ऐसे ही प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है।

13- मौखिक प्रचारः-

मौखिक संस्कृति के लोगों के बीच मौखिक प्रचार कार्य का बड़ा महत्व है। क्योंकि ये लोग अनपढ़ होते हैं जो पुस्तकों के माध्यम से नहीं सीख सकते हैं।

अध्याय -5

सुसमाचार प्रचार में रुकावटें

सुससमाचार प्रचार में आरंभ से ही रुकावटें आती रही हैं। प्रथम शताब्दी ही से रुकावटें हुईं। वर्तमान काल में दो प्रकार की रुकावटें हमारे सामने आती हैंः-

1- भीतरी रुकावटें
2 - बाहरी रुकावटें

1- भीतरी रुकावटेंः-

भीतरी रुकावटें मंडली के भीतर से आती हैं। ये निम्नलिखित प्रकार से आती हैंः-

(1) प्रचार के सन्देश की तेज धार को भोथरा (मंद या धीमा) करने का प्रयत्न किया जाता है।

यह कहकर कि सब धर्मों में परमेश्वर के वचन हैं, अतः केवल बाइबल ही परमेश्वर का वचन नहीं है; सब धर्म एक समान है। परमेश्वर का वचन नहीं है। उसमें कुछ भूलें हैं। उसके वचन आधुनिक विज्ञान के आधार पर सत्य नहीं उतरते।

(2) बाइबल के आश्चर्यकर्मों और भविष्यद्वाणी पर सन्देह किया जाता है।

(3) कलीसियाओं में सांसारिकता और मुर्दापन ने अपना मकड़जाल फैला रखा है।

(4) मंडली का मुख्य ध्येय प्रचार नहीं, दफ्तर चलाना हो गया है।

2- बाहरी रुकावटेंः-

बाहरी रुकावटें सदा से ही रहीं परन्तु समयानुसार उनका रूप बदलता रहा है, कभी मंद, कभी उग्र होता रहा है।

(1) शासन-प्रशासन द्वारा रुकावटः-

शासन-प्रशासन द्वारा भी सुसमाचार प्रचार के सामने रुकावटें रखी जाती हैं। रोमी शासन ने प्रथम शताब्दी में सुसमाचार प्रचार पर रोक लगाया।

(2) कट्टर राष्ट्रीय भावना द्वारा रुकावटेंः-

साम्राज्यवादी शासन से आजाद हुए देशों में स्वतंत्रता के साथ राष्ट्रीय भावनाएँ तीव्र गति से काम करने लगी हैं जो मसीही विश्वास को घातक मानती हैं। इसलिए सुसमाचार प्रचार पर वे रोक लगाती हैं। सताव और दबाव से निर्बल विश्वासी लोगों को पुनः परम्परागत विश्वास की तरफ लौटना पड़ जाता है।

कट्टरतावादी ताकतें ही थीं जिन्होंने ग्राहम स्टेन्स को उनके बच्चों सहित जिन्दा जला दिया। यही वे ताकतें थीं जिन्होंने उड़ीसा, मध्य प्रदेश में आदिवासियों के बीच से आए लोगों पर कहर बरसाया। भारत के विभिन्न प्रान्तों में मसीहियों को इनके सताव का सामना समय-समय पर करना पड़ता है।

(3) आधुनिक उच्चकोटि के विद्यालयों द्वारा रुकावटः-

आधुनिक उच्चकोटि के विद्यालय हैं जहाँ विज्ञान की धारणाओं द्वारा सिद्ध किया जाता है कि परमेश्वर है ही नहीं। विज्ञान परमेश्वर और उसके वचन को तुच्छ समझता है। इससे सुसमाचार प्रचार में रुकावट होती है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय -6

व्यक्तिगत सुसमाचार-प्रचार

व्यक्तिगत सुसमाचार-प्रचार सबसे अधिक प्रभावशाली होता है।

1- व्यक्तिगत सुसमाचार-प्रचार क्या है?:-

जब एक व्यक्ति मसीही प्रचारक दूसरे व्यक्ति से अकेले में बैठकर बातचीत करके सुसमाचार का सत्य समझाता है, और अपने जीवन का अनुभव भरोसे के साथ दूसरे के सामने रखता है। तब सुसमाचार श्रोता की समझ में आता है और उसे विश्वास हो जाता है। यदि कोई प्रश्न उत्पन होते हैं तो वे मित्रता से हल किए जाते हैं। बाइबल के पद खोल-खोल कर पढना और समझाना, श्रोता के हृदय पर लागू करना होता है। अंत में श्रोता यीशु को अपना उद्धारकर्ता मान लेता है। यही व्यक्तिगत प्रचार है।

प्रभु ने लूका 15:1-7 में खोई हुई भेड़ का दृष्टांत देकर समझाया कि चरवाहा एक भेड़ की खोज में कितना कष्ट उठाता है और उसको ढूँढ़कर लाता है। इसी प्रकार व्यक्तिगत प्रचार कार्य करने वाला एक के पीछे परिश्रम करने और कष्ट उठाने में आगे बढ़ता है और उसे परमेश्वर से मिलाता है।

(1) प्रश्नों का उत्तर शांति से दिया जाता है:-

व्यक्तिगत साक्षी प्रचार में व्यक्ति के प्रश्नों का उत्तर शांति और सुगमता से दिया जाता है, सुसमाचार के सत्य को क्रम से सुनाया जाता है। व्यक्तिगत प्रचार में प्रचारक की आत्मिक शांति व धैर्य का प्रभाव श्रोता पर पड़ता है। मानों एक आत्मा दूसरे की आत्मा पर छाया डालती है, आत्मा का सम्पर्क आत्मा से होता है।

(2) व्यक्तिगत संबंध होता है:-

सामूहिक प्रचार में सत्य का प्रचार होता है। परन्तु उसमें निजी संपर्क, व्यक्तिगत सम्पर्क नहीं हो पाता है। व्यक्तिगत मिलने और बातचीत करने से ही यह हो सकता है। सत्य के प्रचार के साथ ही साथ निजी संबंध मित्रता का सा हो जाता है। परस्पर विश्वास एवं श्रद्धा आ जाती है। अब निःसंकोच व्यक्तिगत कठिनाई का वर्णन किया जा सकता है। उसका समाधान परस्पर मिलकर किया जा सकता है। संदेह निकल जाता है। एक दूसरे को गिराने, हराने, नीचा दिखाने की भावना जाती रहती है। यदि प्रचारक ने सुसमाचार के जीवन दायक अनुभव को स्वयं पाया है तो इस समय मित्र के अनुभव में उसका लगाव किया जा सकता है। श्रोता ने बारंबार सुसमाचार के सत्य को सुना था और उसकी किसी न किसी बात से प्रभावित भी हुआ था। अब इस एकान्त वार्ता में सुसमाचार की अदभुत ज्योंति उसके हृदय में प्रवेश कर लेती है। अनुभवी कार्यकर्ता इसमें समय का विचार न करेगा कि कितना समय लग गया है। ऐसे समय में प्रार्थना करके विदा होना मानो परमेश्वर की आशीष और छाया को श्रोता के पास छोड़ना है।

(3) प्रभु की इच्छा पूरी करते हैंः-

व्यक्तिगत प्रचार कार्य निबाहने के द्वारा हम प्रभु यीशु की इच्छा पूरी करते हैं। क्योंकि उन्होंने स्वर्ग पर जाते हुए शिष्यों से यह कहा था, 'तुम मेरे गवाह होगे।' (प्रेरितों० 1:8)

(4) गवाही देते हैंः-

साक्षी देना प्रत्येक विश्वासी के लिए अनिवार्य है। जिस विश्वासी ने प्रभु यीशु को अपना व्यक्तिगत मुक्तिदाता ग्रहण कर लिया है चाहे वह बड़े व्याख्यान न दे सकेगा, चाहे बड़ी सभा में कुछ बोलने से हिचकिचाएगा, परन्तु निजी रूप से एक -एक जन के आगे अपनी साक्षी देने से न डरेगा। कभी-कभी इसमें अधिक सफलता भी मिलती है। व्यक्तिगत प्रचार की विशेषता यही है।

व्यक्तिगत प्रचार वास्तव में साक्षी देना है। एक जन दूसरे जन को साक्षी देकर बताता है कि परमेश्वर ने उसके जीवन में क्या-क्या किया है। ऐसी निजी साक्षी का प्रभाव अच्छा पड़ता है। साक्षी देना क्या है? साक्षी देना उस बात की गवाही देना है जिसको हमने देखा-सुना और अनुभव से जाना है। साक्षी में सुनी-सुनायी बातें, अफवाह में उड़ाई हुई बातें नहीं कही जाती हैं।

2- व्यक्तिगत प्रचार कार्यकर्ता की तैयारीः-

व्यक्तिगत प्रचार कार्यकर्ता को तैयारी करना आवश्यक है। व्यक्तिगत प्रचार कार्यकार्ता की तैयारी निम्नलिखित हैः-

(1) परमेश्वर के वचन का ज्ञानः-

दूसरों को प्रभु यीशु के विषय साक्षी देना परमेश्वर के वचन रूपी बीज बोना है। जो कोई आत्माओं को प्रभु के पास लाना चाहता है उसे वचन का ज्ञान होना चहिए, और उस ज्ञान को उचित रूप से काम में लाना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

मुक्ति के समस्त अनुभव में वचन का ही काम पहिले होता है। वचन से नया जन्म मिलता है। (1 पत० 1:23) वचन के द्वारा उन्नति या बढ़ती होती है। (1 पत० 2:2) वचन के द्वारा बुद्धि आती है। (2 तीमु० 3:15) वचन के द्वारा लोगों की आँखें खुलती हैं।(प्रेरितों० 26:18) और वे अंधकार से ज्योति में आ सकते हैं।

बहस , दलील से हम किसी को हरा सकते हैं परंतु उसके प्रेम को प्रभु के लिए नहीं जीत सकते। परंतु वचन की बातें व्यक्ति को यीशु के पास ला सकती हैं। प्रचार कार्यकर्ता को चाहिए कि वह परमेश्वर

के वचन को अच्छी तरह से पढ़े और उद्धार संबंधी पदों पर चिन्ह लगा ले और उन्हें कंठस्थ कर ले। याद किए हुए वचन पवित्रआत्मा अपने समय पर काम में ला सकेगा।

प्रभु यीशु ने अपनी परीक्षा के समय वचन द्वारा ही शैतान को हराया। व्यक्तिगत प्रचार कार्य में परमेश्वर के वचन को पहिला स्थान देना है। परमेश्वर के वचन पर किसी प्रकार का संदेह नहीं होना चहिए। वचन को समझकर उसका प्रयोग करना है।

(2) अपना निजी अनुभव :-

जिसने अनुभव जाना है वही दृढ़ता से, निश्चय से कह सकता है। प्रभु यीशु ने कहा , 'हम जो जानते हैं वह कहते हैं और जो देखा है उसकी गवाही देते हैं।' (यूहन्ना 3:11) यूहन्ना कहता है, 'जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं। (1 यूहन्ना 1:3)।

जब तक हमने स्वयं प्रभु यीशु पर विश्वास करके मुक्ति नहीं पाई है तो दूसरों को कैसे उसका अनुभव करा सकते हैं। न केवल प्रभु यीशु को जानना है परंतु उसकी संगति में रहना है। व्यक्तिगत प्रचार में कोई सिद्धान्त का प्रचार नहीं परन्तु एक जन की प्रभु यीशु से भेंट कराना है। यीशु हमारे जीवन के लिए कितना प्रिय है, उसने हमारे जीवन में क्या-क्या किया है, दूसरे जीवन में भी वह ऐसा ही करने में सामर्थी है, यही अनुभव प्रभु यीशु के विषय में दूसरे का भी हो जाए। यही व्यक्तिगत प्रचार है। परन्तु अपना अनुभव यदि न रहा तो दूसरे को कैसे उसका अनुभव करा सकते हैं।

निजी अनुभव का जोश अधिक असर करने वाला होता है। जितना सच्चा अनुभव होगा उतना ही अधिक प्रभाव होगा। व्यक्तिगत प्रचारक के लिए यह तैयारी बड़ी आवश्यक है।

हमें मुक्ति का अनुभव प्राप्त हो गया है और कितने हैं जिनको यह नहीं मालुम है। यह ठीक नहीं कि हम चुपचाप रहें। (2 राजा 7 अध्याय) आवश्यकता यह है कि मुक्ति का आनंद उमड़ रहा है, दूसरे को बताये बिना रहा नहीं जाता है, और कि लाखों लोगों को इसकी आवश्यकता है। वे अधंकार में, घटी में, भूल में बैठे हैं। उन्हें न बताया जाएगा तो यह ठीक नहीं।

(3) पवित्र आत्मा का अनुभवः-

व्यक्तिगत प्रचार या कोई भी प्रकार का प्रचार हो, सब आत्मिक सेवा है। बिना पवित्र आत्मा की सहायता, सामर्थ की यह सेवा फलवन्त नहीं हो सकती है। प्रभु यीशु ने स्वर्ग पर जाते समय शिष्यों को प्रतिज्ञा दी थी, 'पवित्र आत्मा आने से तुम सामर्थ्य पाओगे और मेरे गवाह होगे।' (प्रेरितों० 1:8)

जिस सेवा में प्रभु ने शिष्यों को बुलाया है वह आत्मिक युद्ध है। संसार पाप के वश में पड़ा है। पवित्र आत्मा की शक्ति से ही पाप के बंधन तोड़े जा सकते हैं। निर्बल साक्षी देने वाला बलवान बनता है। निर्बुद्धि को बुद्धि मिलती है। प्रभु यीशु के वचन स्मरण दिलाकर बोलने की सामर्थ मिलती है। पवित्र आत्मा की भरपूरी के लिए सदा प्रार्थना करते रहना चहिए। तब ही व्यक्तिगत प्रचार सेवा के लिए तैयार हो सकते हैं। पवित्र आत्मा का अनुभव हमें उस समय मिलता है जब हम उसके लिए तैयार होते हैं। वह तैयारी यह है कि अपने पापों से पश्चाताप करना है, पापों को छोड़ना है तब प्रभु से प्रार्थना करना है। प्रभु यीशु की आज्ञा मानने के लिए अपने आप को सौंप देना है, अपने को अधीन करना है। पवित्र आत्मा काम में अगुवाई करता है। (प्रेरितों० 8 अध्याय)

(4) प्रार्थनाः-

प्रार्थना में हम परमेश्वर का प्रेम, परमेश्वर की इच्छा, परमेश्वर का वचन उस व्यक्ति के लिए माँगते हैं जिसके पास वचन को ले जाना है। प्रार्थना के द्वारा हम अपने को तैयार करते हैं, बल और साहस लेते हैं। प्रभु सब समय और सब कार्य के लिए प्रार्थना करता था। (लूका 9:16,5:16)

(5) विश्वासियों की संगतिः-

एक व्यक्ति के परिश्रम से ही व्यक्तिगत प्रचार नहीं होता। कई लोगों की सेवा, शिक्षा और संगति का प्रभाव उस कार्य पर होता है। एक दूसरे के विश्वास, प्रार्थना, साक्षी और भक्तिपूर्ण जीवन से उत्साह मिलती है। पूरी कलीसिया मसीह की देह है, इसलिए एक अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता, पूरी देह में अंग होकर ही वह कुछ कर सकता है।

(6) समाचार पत्रः-

बहुत से प्रचारक समाचार पत्र नहीं पढ़ते हैं। व्यक्तिगत प्रचार कार्य करने वाले को दैनिक, साप्ताहिक और मासिक धार्मिक व सामाजिक समाचार पढ़ना चहिए। इससे हम समझ सकते हैं कि स्थान विशेष में जहाँ कार्य करना है, क्या-क्या आवश्यकताएँ हैं जिनके लिए प्रार्थना, वचन, आत्मा के द्वारा तैयारी की जा सकती है, और साथ ही लोगों से बातचीत करने का एक मंच मिल जाता है। समय, देश और क्षेत्र का हाल जानना बहुत आवश्यक है।

Creation Autonomous Academy

(7) लोगों को जाननाः-

न केवल समाचार पत्रों से जानकारी होनी चहिए, वरन् लोगों से भी परिचय होना चहिए। हमें जनता में और उगती हुई जवानी के बीच चलना फिरना पड़ता है। दुःखी रोगी के पास जाना पड़ता है। चिकित्सालय, शराबखाने आदि में, जहाँ भी लोगों को यीशु के प्यार की जरूरत है, हमें जाना पड़ता है।

हमें इस इरादे से वहाँ के लोगों को जानना है कि उनकी सहायता कर सकें, और सुसमाचार की सामर्थ उनको दे सकें।

3- व्यक्तिगत प्रचार कार्यकर्ता के गुणः-

व्यक्तिगत प्रचार कार्यकर्ता में निम्न गुण होने चहिएः-

(1) संदेश की सत्यता का पूर्ण निश्चयः-

व्यक्तिगत कार्यकर्ता को इस सच्चाई का पूर्ण निश्चय हो कि सुसमाचार का संदेश सत्य है और इस संसार के लिए, जो पाप और स्वार्थ में नाश हो रहा है, यह एक ही उपाय है। इस बात का पूरा निश्चय हो और तब इस सत्य को एक-एक जन तक पहुँचाने का संकल्प उसका पहिला गुण हो। (2 तीमु० 1:12, रोमि॰ 1:16,1 तीमु० 1:15,)। मसीह यीशु ही मुक्तिदाता है। यीशु ही जीवन की सब कमियों और माँगों को पूर्ण करता है। उसमें जीवन और शांति है। ऐसा निश्चय रखते हुए संसार के ज्ञानवान के आगे भी साक्षी देने को तत्पर रहना चाहिए।

इस बात का निश्चय हो कि लोग पाप में मर रहे हैं। एक-एक आत्मा का मूल्य बहुत बड़ा है। उसको नरक के नाश से बचाना है। हमें जो जीवन मिला है उसका सुसंदेश देना है। यदि हम उन्हें सुसमाचार सुनाकर नहीं बचाते तो वे नाश हो जाएँगे।

उद्धार हेतु प्रभु यीशु का सुसमाचार ही मात्र एक उपाय है। मसीह यीशु की साक्षी बड़े निश्चय के साथ देना है। (1 थिस्स॰ 1:5) क्योंकि केवल वही मनुष्य के पूरे व्यक्तित्व का उद्धार कर सकता है।

किसी व्यक्ति या घराने के संबंध में निश्चय होना आवश्यक है कि परमेश्वर उसका अवश्य उद्धार करेगा। संभव है कि फल बरसों तक दिखायी न दे फिर भी हमारा निश्चय रहे कि ‘परमेश्वर चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो और वे सत्य को भली भाँति पहिचानें।(1 तीमु० 2:4)

Creation Autonomous Academy

(2) पवित्र आत्मा का अभिषेकः-

पवित्र आत्मा का अभिषेक प्रत्येक प्रचार कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है। व्यक्तिगत प्रचार कर्ता को पवित्र आत्मा का अभिषेक पाना आवश्यक है।

(3) अच्छा आचरणः-

संसार की बुरी बातों से अलग रहे ‘इस संसार के सदृश्य न बनो।’ (रोमि० 12:2-3) परमेश्वर पवित्र पात्र को काम में लाता है। ‘यदि कोई अपने आप को शुद्ध करेगा तो वह आदर का पात्र और पवित्र ठहरेगा।’ (2 तीमु० 2:11)। सुसमाचार प्रचारक यदि स्वयं बुरी चाल में है तो दूसरों को क्या

चेतावनी देगा और मुक्ति का संदेश कैसे सुना सकेगा। अच्छे आचरण का नमूना प्रभु यीशु का आचरण है। बुरी बातें वे हैं जो यीशु के जीवन एवं कार्य से मेल नहीं खातीं।

(4) समर्पित जीवनः-

अपने हृदय और स्वेच्छा से सुसमाचार प्रचार कार्यकर्ता को यीशु ख्रिस्त के प्रति अपने को अपर्ण करना है। (रोमि 12:1-2)। ऐसे जीवन में पवित्र आत्मा रह सकता है, अपना पूरा अधिकार रख सकता है और यह उसे काम में ला सकता है। ऐसे जीवन व्यतीत करें, पवित्रता का जीवन (1 थिस्स 4:3,7), विजयी जीवन (1 यूहन्ना 5: 4-5) आदि। समर्पण में यह भी शामिल है कि हममें लोगों के उद्धार की गहरी चिन्ता हो। (यूहन्ना 3:18, 36, लूका 16:12-31)। इस समर्पण में निः स्वार्थता होना चाहिए। प्रशंसा या लाभ पाने की भावना न हो। केवल यही भाव हो कि लोगों का उद्धार हो, उनका जीवन आनंदमय हो और परमेश्वर की महिमा हो।

(5) मिलनसारी :-

व्यक्तिगत प्रचार का अवसर मित्रता करने से मिलता है। प्रचारक जहाँ भी जाता है मित्रता से बातें करके दूसरे व्यक्ति के मन को आकर्षित कर लेता है। मिलनसार होने में सहायता एवं सहानुभूति देनी पड़ेगी। व्यक्तिगत प्रचार कार्यकर्ता दूसरे के लिए खर्च करने को तैयार रहता है। मित्र के लिए सब कुछ करने के लिए है। मिलनसार होने के लिए सदा हँसमुख रहें। किसी से मिलने पर स्वयं पहिले नमस्कार करें। घर वालों का कुशलक्षेम पूछें। दुःख, बीमारी के समय सहायता देने के लिए तैयार रहें। प्रभु यीशु का गवाह हँसमुख, मित्रभाव से बैरियों के पास जाकर अपनी साक्षी दे सकते हैं। हताश, निराश एवं दुःखी चेहरा नहीं होना चहिए।

कभी-२ प्रचार का अवसर नहीं मिलेगा, विरोधी कुछ भी बोलने नहीं देगें। परंतु हमें मिलनसार बने रहना है। व्यक्तिगत प्रचार में यह पहला कदम होगा ।

(6) धैर्य से लगे रहनाः-

Creation Autonomous Academy

एक ही आत्मा के लिए लोगों ने वर्षों लगातार प्रर्थाना की है। प्रार्थनापूर्वक जाना और बातचीत करना है। वचन श्रोता के सामने रखना है। कभी-कभी बहुत समय तक कोई फल नहीं दिखता है। तौभी परेशान या निराश नहीं होना है। कार्यकर्ता जानता है कि परमेश्वर अपने समय पर कार्य करेगा, बीज उगाएगा। परमेश्वर जब किसी का बोझ देता है तो धीरज के साथ उसके मन बदलने की बाट जोहना है। (प्रेरितों० 26:22) धैर्यपूर्वक लगे रहने वाला सफलता अवश्य पाता है।

4- व्यक्तिगत प्रचार कार्य की पद्धतिः-

व्यक्तिगत प्रचार कार्य की पद्धति को समझने के लिए मत्ती 14:34-36 का अभ्यास करें। संसार के प्राणी की दशा रोगियों जैसी है।

(1) पापियों के उद्धार की चिन्ता करेंः-

हमें संसार के सब पापियों के लिए चिन्ता होनी चहिए। हमें बोझ होना चहिएः-

1ः लोग पापी हैं। (मत्ती 14:35) ः-

प्रत्येक जन जिसे मुक्ति नहीं मिली है पाप रोग से ग्रसित है। जब तक प्रभु यीशु पर विश्वास करके छुटकारा नहीं पा जाता तब तक उसका अन्त भयानक होगा। क्या आपने कभी गंभीरता पूर्वक विचार किया है कि प्रत्येक मिनट सैकड़ों लोग परमेश्वर के बिना, मुक्ति के बिना, आशाहीन होकर अनंत नरक में चले जा रहे हैं? लोगों की सनातन दशा की ओर दृष्टि करें तो उनके बोझ का भी अनुभव होगा । (यूहन्ना 3:18,36, 8:21,24, मत्ती 25:46)

2ः लोग प्रभु से दूर हैं। (मत्ती 14:35)ः-

करोड़ों-करोड़ लोग आत्मिक रूप से प्रभु से दूर हैं। जिन लोगों ने पश्चाताप नहीं किया है उनका बोझ अनुभव करें।

3ः लोग अपने से लाचार हैं। (मत्ती 14:35)ः-

लाचार लोगों के लिए आवश्यकता होती है कि दूसरे लोग उनको प्रभु के पास लाएँ। पापी सचमुच लाचार हैं, ‘जब हम निर्बल ही थे तब प्रभु हमारे लिए मरा।’ (रोमि० 5:6)। व्यक्ति बाहर से अच्छा दिखने की कोशिश कर रहा है, परंतु हृदय के भीतर घोर युद्ध चल रहा है जिसमें वह हार रहा है। क्या इनका बोझ हम पर है?

Creation Autonomous Academy

4ः लोगों को जानना और उनके पास जाना है। (मत्ती 14:35)ः-

कुछ लोगों ने यीशु को पहचाना, उनको यीशु की जानकारी हो गयी। अब वे दूसरों को समाचार देते हैं। यहाँ जानने और जाने का सम्बन्ध है। क्या इस जानने का अनुभव और जाने का बोझ हममें है?

(2) लोगों को ढूँढ़ कर लाएँ। (मत्ती 14:35)ः-

खोए हुओं को खोजना एवं प्रभु के पास लाना हैः-

1ः खोजें (मत्ती 14:35)ः-

उन्होंने रोगियों को ढूँढ़ा। प्रभु की आज्ञा है, 'तुम सारे जगत में जाकर प्रचार करो।' (मर० 16:15)

2ः यीशु के पास लाएँ (मत्ती 14:35)ः-

वे रोगियों को यीशु के पास लाए। लोगों के पास जाना और उनको प्रभु के पास लाना है। हमें केवल सन्देश नहीं देना है, हमें यत्न भी करना है कि लोगों को हम यीशु के पास लाएँ।

3ः प्रार्थना करें (मत्ती 14:36)ः-

उन्होंने रोगियों के लिए विनती की। प्रभु से विनती करें और लोगों की प्रभु से भेंट कराएँ।

(3) प्रतिदिन के कार्य व्यवहार के लिए सुझावः-

प्रतिदिन के व्यवहार के लिए निम्नलिखित सुझाव हैंः-

1- प्रार्थनापूर्वक तैयारी करेंः-

प्रार्थना विशेष यह हो, 'हे प्रभु, आज मैं कहाँ जाऊँ? हे प्रभु, आज मुझे खोजी व्यक्ति के पास ले चल।' परमेश्वर अगुवाई करता है। वह ऐसे जन से मिलाता है जो वास्तव में सत्य का खोजी है।

2- अपनी बाइबल साथ लेंः-

आपकी बाइबल ऐसी हो जिसको आपने अच्छी रीति से पढ़ा है, जिसमें आपने निशान लगाया है। वचन सुनाते समय आप आसानी से स्थल खोलकर पढ़ सकें। मुक्ति सम्बंधी पदों पर चिन्ह होना चहिए। न केवल आपके पढ़ने के लिए बाइबल हो परन्तु श्रोता के पास छोड़ने के लिए भी धर्मशास्त्र के भाग, पढ़ने के पर्चे भी साथ हों।

दूसरे व्यक्ति के बोलने से पहिले आप उसे नमस्कार करें। यदि आपका मित्र या पहिचान वाला है तो पहले कुशल मंगल पूछें और इसके बाद किसी कहानी के द्वारा वार्तालाप आरंभ करें। इसका अभिप्राय यही हो कि श्रोता मुक्ति की बातों पर ध्यान दे सके।

Creation Autonomous Academy

3- श्रोता के सामने रखे जाने वाले विषयः-

(क) सारा संसार पापी हैः-

सारा संसार पापी है और वह भी परमेश्वर के सामने पापी है। पद आपको स्मरण रहें रोमि० 3:23, 6:23। बाइबल में कई पद निकाल कर पढ़वाएँ और साथ ही प्रश्न करते जाएँ, 'क्या यह आपका हाल नहीं है?' ऐसे पद हैंः 1 कुरि० 6:9-10, गला० 5:20-21, प्रका० 21:8 कोई कहेगा कि मैं इन

पापों में नहीं हूँ तो पढ़िए मत्ती 22:37-38 और विचार कीजिए कि क्या हमने इस प्रकार प्रेम किया है? परमेश्वर का वचन कायल करेगा।

(ख) पाप पर दण्ड का आदेश हैः-

अब पाप का भयानक दंड पढ़कर दिखाएँः लूका 13 : 5, यूहन्ना 8:24, प्रका० 21:8,20:15, लूका 16:19-31 का दृष्टांत । इब्रा० 10:30-31 का वचन कि जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

(ग) प्रभु यीशु ने हमारे बदले में दुःख और मृत्यु सहा हैः-

इसके बाद समझाइए कि प्रभु यीशु ने हमारे बदले में दुःख और मृत्यु सहा है। यशा० 53:1-9 को पढ़ाएँ और हमारे शब्द पर ध्यान खींचें। यदि श्रोता अपना नाम वहाँ पर रखकर पढ़े जहाँ 'हमारे' लिखा है तो मन पर अधिक असर होगा।

इसके साथ मर० 10:45, रोमि० 3:25,5:8, गला० 2:20,1 पत० 2:24, प्रका० 1:5 पढ़ायें या पढ़ें। प्रभु यीशु ने पापियों का दंड अपने ऊपर उठाया है।

(घ) प्रभु के द्वारा ही पापों की क्षमा व छुटकारा हैः-

उसी के द्वारा पापों की क्षमा, छुटकारा है। अब इस बात को समझाएँः यूहन्ना 5:24, प्रेरितों० 5:32, 13:38-39, इफि० 1:7 जो विश्वास से क्षमा को ग्रहण कर लेता है, उसे क्षमा मिल जाती है। रोमि० 10:9 बार-बार पढ़ाएँ। उसकी सहायता करें कि वह विश्वास के मन से इसको ग्रहण करे। इसको विश्वास से अपनाएं।

(च) मुक्ति के निश्चय के पद पढ़ेंः-

अब मुक्ति के निश्चय के पद पढ़ें और श्रोता से भी पढ़वाएँः यूहन्ना 3:16, 6:37, 8:36, फिलि० 1:6, 2 तीमु० 1:12,4:18, 1 यूहन्ना 3:1-3

Creation Autonomous Academy

(छ) उदाहरण प्रस्तुत करेंः-

उन लोगों की मिसालें दें जिन लोगों ने विश्वास करके आनन्द पायाः प्रेरितों 9:18, 16:34। जब इन पदों को काम में लाएँ तो सदा ही यह कष्ट उठाएँ कि पहले आप स्वयं उनको अपनी तैयारी करते समय पढ़ें, और उन पर चिन्ह लगाएँ।

सब समझाने के पश्चात् श्रोता के साथ प्रार्थना करें और उसको भी प्रार्थना करना सिखाएँ। प्रभु की आत्मा का सच्चा कार्य खोजी के हृदय पर होगा और उसका अनुभव प्रभु यीशु पर विश्वास में आरम्भ हो जाएगा।

ऊपर लिखे क्रम और पदों को केवल मुक्ति के खोजी के लिए ही काम में लाना है।

4- अनोखी जगह जानाः-

व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार कार्य में कभी-कभी अनोखी जगह जाना पड़ता है। अनोखे मार्ग से जाना पड़ता है और अनोखे जन से भेंट करना पड़ता है। परमेश्वर की अगुवाई और बुद्धि से यही सब किसी जन के उद्धार का कारण बन जाता है। उदाहरण सामरी स्त्री की यीशु से भेंट।

5- व्यक्तिगत प्रचार कार्य की व्यवहारिक समस्याएँः-

व्यक्तिगत प्रचार एक कला है। कुछ में यह स्वाभाविक गुण होता है एवं कुछ इसमें अभ्यास से दक्षता प्राप्त कर सकते हैं।

व्यक्तिगत प्रचार कार्यकर्ता के पास आत्मिक तैयारी होते हुए भी कई बार इस कार्य में बाधाएँ आ जाती हैं जिनको समझना है और उनको जानकर प्रार्थना से तैयारी करना है।

समस्याएँ अपनी ओर से हो सकती हैं और समस्याएँ बाहर से हो सकती हैं।

1- आन्तरिक समस्याएँः-

आन्तरिक समस्याएँ स्वयं कर्ता में होती हैंः-

(1) कार्य को साधारण कर्तव्य समझनाः-

कार्यकर्ता प्रत्येक दिन, प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर की ओर से विशेष नहीं समझता है। इस सेवा में बराबर लगे रहने से कार्य को साधारण प्रतिदिन का कर्तव्य समझ लेते हैं। आवश्यक सेवा समझकर उसके लिए प्रार्थना करना, विशेष रूप से अपने को प्रभु के हाथों में सौंपना भूल जाते हैं ।

प्रत्येक जन व प्रत्येक दिन विशेष है और अनोखा अवसर लाता है। ऐसा विश्वास करके मन में विशेष तैयारी प्रतिदिन के लिए करना है।

Creation Autonomous Academy

(2) वार्तालाप सही रीति से आरंभ न करनाः-

तैयारी ठीक है, संदेश भी मन में उबल रहा है परन्तु ठीक आरंभ नहीं किया गया। बातचीत को एक प्रवाह में चलाना है जिससे श्रोता आत्मिक विषय पर सोचने लगे। श्रोता अपनी आवश्यकता को समझ ले।

वार्ता का आरंभ बिगड़ गया तो सारी वार्ता दूसरे पथ पर चली जाएगी और आत्मिक बातों के बदले सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक उलझनों में उलझ जायेगी। परिणामस्वरूप देर तक बातचीत होगी और किसी को लाभ न होगा।

(3) अस्वच्छताः-

कभी-कभी हमारी अस्वच्छता बाधा डालती है। मुँह से बास, कपड़ों में बास, पसीने की बास इत्यादि।

2- बाह्य समस्याएँः-

बाह्य समस्याएँ श्रोता की तरफ से आती हैंः-

(1) श्रोता को न जाननाः-

बिना श्रोता के मन को जाने उससे बात करना। उस प्रकार की बातचीत से श्रोता पर प्रभाव नहीं पड़ता।

(2) श्रोता का टाल-मटोल करनाः-

किसी जन से बात अच्छी रीति से आरंभ हो जाएगी और ऐसा जान पड़ेगा कि श्रोता आत्मिक बातों को समझ रहा है। वक्ता एक-एक बात प्रेम और सफाई से समझाता जाएगा परंतु फैसले के समय श्रोता फिसल जाएगा। फैसला करने के बदले बेकार की बहस करने लगेगा। बात को टालने का यत्न करेगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-7

ग्रामीण सुसमाचार-प्रचार

भारत एक विशाल ग्रामीण आबादी वाला देश है। अधिकांश जनसंख्या अशिक्षित है, उनके पास अक्षर ज्ञान नहीं है। इसलिए भारत में सुसमाचार प्रचार के लिए यह जानना आवश्यक है कि गाँवों में कैसे सुसमाचार प्रचार किया जाए? जनजातीय आबादी सूदूर पहाड़ों व जंगलों में निवास करती हैं। वहाँ आवागमन के साधन नहीं हैं। वे मुख्य धारा से कटे हुए अलग-थलग हैं। भाषाई एवं परम्पराओं के अन्तर भी मौजूद हैं। भारत में विभिन्न धर्म ,भाषा, संस्कृति ,जाति आदि के लोग निवास करते हैं। सभी तक सुसमाचार पहुँचाया जाना आवश्यक है।

“ग्रामीण सुसमाचार प्रचार गाँव के लोगों को विशेष रूप से उनके पास जाकर, उनके समय के अनुसार और उनकी संस्कृति, उनकी शैली में सुसमाचार प्रचार करना है। सुसमाचार के सत्यों को बताना है।”

यदि हम भारत में सुसमाचार सुनाना चाहते हैं तो हमें ग्रामीण सुसमाचार प्रचार पर ध्यान देना ही होगा। अशिक्षित समुदाय में छपे साहित्य वितरण का तरीका कारगर नहीं होगा। इनको सुसमाचार प्रचार करने के लिए सुनाने, समझाने, दिखाने, सिखाने, और नमूना पेश करने वाले लोगों को उनके पास जाना आवश्यक है।

ग्रामीण प्रचार कार्यकर्ता की तैयारीः-

ग्रामीण सुसमाचार प्रचार के लिए प्रचार कार्यकर्ता को तैयारी करना आवश्यक हैः-

1- आत्मिक तैयारीः-

इस प्रकार का प्रचार कार्य गंभीर आत्मिक तैयारी की माँग करता हैः-

(1) प्रार्थनाः-

प्रचारक का जीवन प्रार्थना का जीवन हो। प्रार्थना उसकी आदत में शामिल हो। पहले प्रार्थना में परमेश्वर की सामर्थ प्राप्त करें तब सुसमाचार प्रचार के लिए जाएँ। क्योंकि यह नगरीय सुसमाचार से काफी भिन्न है।

(2) वचन का ज्ञानः-

प्रचारक का जीवन वचन अध्ययन का जीवन हो। प्रतिदिन वचन का अध्ययन-मनन करे जिससे कि वह स्वयं वचन के सही अर्थ और शिक्षा को समझता हो। जिसे वह सरल से सरल रूप में

लोगों को समझा सके। प्रचारक वचन को जीवन में जीने वाला हो। लोग उसके प्रचार को उसके जीवन में देखते हैं।

(3) परमेश्वर पर पूर्ण निर्भरताः-

प्रचारक सब कुछ के लिए पूर्ण रूप से परमेश्वर पर निर्भर रहे। "जाही विधि राखे यीशु ताही विधि रहियो।"

(4) पवित्र आत्मा का मार्गदर्शनः-

प्रचारक पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन प्राप्त करें। जैसे प्रेरितों ने पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन पाकर सेवा की वैसे ही ग्रामीण प्रचार कार्यकर्ता भी करें।

1- भौतिक तैयारीः-

इस प्रकार का प्रचार कार्य भौतिक तैयारी की भी माँग करता है।

(1) सादा जीवनः-

"सादा जीवन उच्च विचार।" प्रचारक का जीवन सरल एवं सीधा-सादा होना चाहिए। वह चमक-दमक के जीवन से दूर रहे।

(2) सादा वेशः-

प्रचारक की वेशभूषा का भी बहुत प्रभाव पड़ता है। प्रचारक की वेशभूषा सरल एवं सादा होनी चहिए। ग्रामीण सुसमाचार प्रचार के लिए ग्रामीण वेशभूषा भी धारण करना पड़ेगा। उदाहरण के तौर पर गाँव में प्रचार के लिए धोती कुर्ता धारण कर सकते हैं जो एक साधारण व्यक्ति की पोशाक है। जिसे किसान और मजदूर धारण करते हैं। यदि सादगी का प्रतीक सफेद रंग की पोशाक हो तो अति उत्तम होगा। जनसाधारण की वेशभूषा का उपयोग करें।

Creation Autonomous Academy

(3) रहन-सहनः-

प्रचारक का रहन-सहन भी गाँव के लोगों के रहन-सहन से मेल खाना चाहिए। जैसा जीवन वे जीते हैं उनसे मेल खाता जीवन हो।

(4) खान-पानः-

प्रचारक का खान-पान गाँव के स्थानीय लोगों के खान-पान से मेल खाना चाहिए। लोगों के खान-पान से भिन्न नहीं होना चाहिए। आम तौर पर शाकाहारी व्यक्ति को सभी पसन्द करते हैं।

(5) त्यागपूर्ण जीवनः-

प्रचारक का जीवन त्यागपूर्ण जीवन होना चाहिए। कम से कम संसाधनों पर जीवन जीना सीखना पड़ेगा क्योंकि भारतीय धार्मिक व्यक्ति इसी प्रकार का जीवन समाज में रहते हुए जीता है। लोगों के सामने आस्था पर चलने का श्रेष्ठ नमूना रखता है।

(6) परमार्थी जीवनः-

वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखै, नदी न संचे नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर ।।

प्रचारक को परमारथ अर्थात् दूसरों की सेवा करने के प्रति समर्पित होना चाहिए। प्रभु यीशु के नमूने को धारण करें 'सेवा कराने नहीं, सेवा करने आया'।

(7) बलिदानी जीवनः-

प्रचारक को बलिदानपूर्ण जीवन जीना पड़ेगा। बहुत कुछ परमेश्वर के राज्य के लिए बलिदान करना पड़ेगा।

(8) परहित का ध्यान रखने वालाः-

प्रचारक को औरों के हितों का ध्यान रखने वाला होना चाहिए तभी वह गाँव व जंगल के लोगों को सुसमाचार सुना पायेगा। इसके लिए अपने स्वार्थ का परित्याग करना पड़ेगा।

(9) अपनी जीवन-शैली से शिक्षा को प्रकट करने वालाः-

प्रचारक ऐसा जीवन जीता है कि उसकी जीवन-शैली ही लोगों तक शिक्षा पहुँचा देती है।

(10) भजनः-

Creation Autonomous Academy

जो गीत गाए जाएँ वे गाँव की बोली में हों। भजन संहिता के भजनों, बाइबल खण्डों को भजन, कीर्तन, कहरवा, ठुमरी, चौताल, चौपाई, छन्द, कवित, सवैया आदि में ढालकर गाया जा सकता है। गाँव की लोकगीत शैली का उपयोग किया जा सकता है।

(11) वाद्य-यंत्रः-

जो वाद्य-यंत्र भजन के लिए उपयोग किए जाएँ, स्थानीय स्तर पर उपयोग किए जाने वाले हों। आम तौर पर जो गाँव के लोग उपयोग करते हैं जैसे ढोलक, हारमोनियम, मजीरा, चिमटा, झाँझ, बाँसुरी इत्यादि।

ग्रामीण सुसमाचार-प्रचार की पद्धतिः-

ग्रामीण प्रचार की स्थानीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पद्धति हैः-

1- कहानी सुनाने वालाः-

कहानी सुनाने वाले को 'कथावाचक' कहते हैं। कथा वाचक की शैली में सुसमाचार लोगों तक पहुँचा सकते हैं। इसमें रोज उद्धार की कथा सुनाने हेतु कम से कम एक घर में जाना है। प्रत्येक दिन न्यूनतम एक घर का लक्ष्य होना चाहिए। ऐसी पद्धति में जिसके घर कथा होती है वह अपने कुटुम्ब एवं पड़ोसियों को भी बुलाता है और कथा सुनने में शामिल करता है। यह सामूहिक सुसमाचार प्रचार की पद्धति है। बाइबल से पश्चाताप, उद्धार, संस्कार-बपतिस्मा-प्रभु भोज, प्रेम, प्रार्थना, देना सीखना, विश्वास को बांटकर औरों को शिष्य बनाना और शिक्षा की कहानियां पहले से तैयार कर लें। कहानी के माध्यम से लोगों को सामूहिक रुप से सुसमाचर सुनाएं। कहानी सुनने में लोग रुचि लेते हैं। एक अच्छा कहानी सुनाने वाला बनें। प्रभु यीशु मसीह एक अच्छा कहानी सुनाने वाला था। उसने शिक्षा देने के लिए दृष्टांतों का बहुतायत से उपयोग किया।

2- पढ़कर सुनाने वालाः-

पढ़कर सुनाने वाले को पाठ कर्ता कहते हैं। कथा सुनाने में वाचक कथा सुनाते हुए स्थानीय भाषा में समझाता जाता है। परंतु पाठ करता मात्र शास्त्र को पढ़कर सुनाता जाता है। लोगों को बाइबल पढ़कर सुनाएं वचन कार्य करेगा और पवित्र आत्मा लोगों के हृदयों को कायल करेगा। प्रभु यीशु ने आराधनालय में याजक के कहने पर पवित्र शास्त्र को पढ़कर सुनाया व समझाया।

3- उपदेशकः-

उपदेशक को प्रवचन कर्ता कहते हैं। प्रवचन कर्ता किसी विषय विशेष पर अपने व्याख्यान लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है। लोग प्रवचन सुनकर अपने जीवन के लिए शिक्षा ग्रहण करते हैं। यह शिक्षा प्रदान करने की पद्धति है इससे लोगों को परमेश्वर का वचन सिखाएं। प्रभु यीशु अधिकारी की नाई उपदेश देता था। उसने पहाड़ी उपदेश में व्यवस्था की व्याख्या किया।

4- शिक्षकः-

शिक्षक को गुरु जी या गुरु महराज कहते हैं। गुरू धार्मिक सिद्धान्तों को समझाने-सिखाने वाला होता है वह किसी गाँव में जाकर अपना चेला बनाता है। उसे धर्मसिद्धान्त को समझाकर पालन करना सिखाता है। एक निश्चित अवधि में वह बार-बार चेलों के घर जाता है, और हमेशा सिखाता रहता है। जब गुरू गाँव से चला जाता है तब चेले ने जो सीखा है उसे गाँव वालों को सिखाता रहता है। जब भी चेले के घर गुरू का आगमन होता है, चेला फौरन गुरू के आने की सूचना गाँव वासियों को देता है। लोग

प्रातःकाल एवं सायंकाल आकर गुरू के उपदेश को सुनते हैं। जब तक कि गुरू गाँव से चला नहीं जाता, लोग प्रतिदिन ऐसा करना जारी रखते हैं। ऐसी परम्परा स्थापित है।

याद रहे हम गुरु नहीं हैं मात्र हम इस विधि का उपयोग कर रहे हैं। बाइबल सिद्धान्तों को सिखाने, चेला बनाने, सुसमाचार सुनाने के लिए इस विधि का उपयोग करें। चेलों को चेला बनाना सिखाएं। चेलों का समुदाय स्थापित करना सिखाएं। आराधना करना सिखाएं। प्रभु यीशु ने अपने चेलों को स्वर्गीय राज्य की नागरिकता के मूल्यों की शिक्षा दिया। स्वर्गारोहण से पहले 40 दिनों तक वह चेलों को सिखाता रहा।

5- याजकः-

याजक को पुरोहित या पुजारी कहते हैं जो आराधना में अगुवाई करता है। पुजारी का काम आराधना संचालित करना होता है। उस स्थानीय आराधना का संदेश प्रचारक भी वही होता है। प्रातः व संध्या आराधना एवं संदेश प्रतिदिन होता है। अपना जीवन आराधनामय बनाएं जिससे दूसरों को सच्चे परमेश्वर की आराधना करने हेतु प्रोत्साहन प्राप्त हो सके। याजकीय सेवकाई करें। प्रभु यीशु हमारा महायाजक है। उसने हमारे छुटकारे के लिए अपना प्राण दिया। वह हमारे लिए पिता से विनती करता है। यूहन्ना 17 अध्याय

6- व्यवहारिक शिक्षकः-

व्यवहारिक शिक्षक को संत कहते हैं, संत जन दिन-प्रतिदिन के जीवन व्यवहार का मार्गदर्शन उपदेश द्वारा करते हैं। कठिन से कठिन बातों को बड़ी सरलता से उपदेश द्वारा लोगों को समझाते हैं। लोगों को वचन के अनुसार जीवन जीना सिखाएं। प्रभु यीशु ने प्रेरितों को व्यवहारिक शिक्षा प्रदान किया। वह दैनिक उपयोग में आने वाली चीजों का उपयोग करके आत्मिक सत्य की शिक्षा लोगों को प्रदान किया।

7- शिष्यः-

शिष्य को चेला या भक्त कहते हैं। जो स्वतः धर्मसिद्धान्त का पालन करता है और समय-समय पर लोगों को धार्मिकता का मार्गदर्शन करता है। वह शिक्षा भी प्रदान करता है। लोगों के लिए प्रार्थना करता है। परमेश्वर के वचन से शिक्षा प्रदान करें और लोगों की आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें। प्रभु यीशु ने चेला बनाया, उन चेलों में से प्रेरितों का चुनाव किया कि वे आगे उसकी शिक्षा को सिखा सकें व उसके उद्देश्य को पूरा करने के लिए कार्य कर सकें।

Creation Autonomous Academy

8- आपात्कालीन पद्धतिः-

आपातकालीन स्थिति में बिना शोर मचाये प्रचार किया जाता है। धर्मसिद्धान्तों को समझाने में समय लगाया जाता है। आम प्रचार के बजाय चेलों को मजबूत करने और उनके द्वारा प्रचार को फैलाने का तरीका अपनाया जाता है। “हरेक सुनाए एक को।” का तरीका उपयोग किया जाता है। जब तक समय

नहीं आया प्रभु यीशु अपने विरोधियों के मध्य से निकलकर चला गया। उसने ज्यादा से ज्यादा समय प्रेरितों को सिखाने व आत्मा बचाने में लगाया।

हमें बेहिचक उक्त तरीके का प्रयोग करना चहिए। परन्तु इसके लिए बहुत जरूरी है कि लोगों के साथ गहरा आत्मीय सम्बन्ध बनाया जाय।

कुछ अनुकरणीय विधाएंः-

अनुकरणीय विधाएँ निम्नलिखित हैंः-

1- धर्मशास्त्र का जनभाषा में भाष्यः-

धर्मशास्त्र का विशेष भाषा से जनभाषा में अनुवाद, अर्थानुवाद एवं प्रचार किया जाता है। लोगों को बाइबल उनकी अपनी स्थानीय भाषा में समझाएं।

2- धर्मसिद्धान्त को ग्रहणयोग्य बनानाः-

धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों को लोगों के ग्रहणयोग्य बनाया जाता है जिससे कि लोग आसानी से उसे ग्रहण कर सकें।

3- धर्मसिद्धान्त को जन जीवन-शैली में पहुँचनाः-

धर्मसिद्धान्तों को प्रतिदिन के जीवन में पहुँचाया जाता है। उन्हें आम जनता का बनाया जाता है।

4- धर्म सिद्धान्त को काव्य व कथा में ढालनाः-

धर्मसिद्धान्तों को गाने योग्य काव्य में ढाला जाता है। कथा विधा में ढाला जाता है जिसे लोग आसानी से याद कर लेते हैं और प्रतिदिन के जीवन में आनन्द के साथ उपयोग करते हैं।

Creation Autonomous Academy

5- जन उत्सवः-

धार्मिक सिद्धान्तों व क्रियाकलापों को जन उत्सव में समाहित किया जाता है। गाँव के लोग उत्सवों में बड़े हर्ष व उल्लास के साथ भाग लेते हैं। इससे उनका मनोरंजन होता है। इस अवसर पर वे धर्मसिद्धान्तों को स्मरण करते व पुनरावलोकन करते हैं।

6- मुखिया-सरदारः-

हरेक परिवार का एक मुखिया होता है या हरेक कबीले का एक सरदार होता है। मुखिया स्वयं परिवार का पुरोहित होता है। जो स्वतः स्वयं धर्मसिद्धान्तों का पालन करता है और कड़ाई से परिवार के

हरेक सदस्य से पालन कराता है। वह परिवार के बीच प्रचार करता और अपने समुदाय के बीच भी उठते, बैठते, चलते, कार्य करते और यहाँ तक कि विश्राम के समय भी आम बोलचाल में लोगों को बताता रहता है। बताने का माध्यम कहानी, नजीर व लोकोक्ती, मुहावरा, कहावतें आदि होते हैं।

ग्रामीण सुसमाचार प्रचार में आने वाली बाधाएंः-

ग्रामीण सुसमाचार प्रचार में भी प्रचारक को बाधाओं का सामना करना पड़ता हैः-

1- आन्तरिक समस्याएं

आन्तरिक समस्याएँ प्रचारक के अन्दर से आती हैंः-

(1) अपने आराम को प्राथमिकताः-

कार्यकर्ता को अपने आराम की चिन्ता होती है जबकि ग्रामीण सुसमाचार प्रचार परिश्रम की माँग करता है।

(2) पश्चिमी संस्कृति का प्रभावः-

पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण ग्रामीण जीवन में ढलना मुश्किल होता है।

(3)नगरीकरण का प्रभावः-

शहरी संस्कृति का प्रभाव भी प्रचारक को ग्रामीण जीवन में ढलने में बाधा है। शहर का सुविधाजनक जीवन छोड़कर कार्यकर्ता गाँव के अभावग्रस्त जीवन में जाना नहीं चाहते।

(4) तरस का अभाव :-

कार्यकर्ता में गाँव के प्रति वहाँ के लोगों के प्रति तरस न होना भी एक बाधा है।

Creation Autonomous Academy

(5) स्वयं का स्वार्थः-

सभी में कमोबेस स्वार्थ मौजूद है। हमारा क्या होगा? जो त्याग की भावना को कम करता है।

2- बाह्य समस्याएंः-

बाह्य समस्याएँ शत्रु और ग्रामीणों की ओर से आती हैंः-

(1) विरोधः-

आरम्भ में ग्रामीण लोग अपना विरोध प्रकट कर सकते हैं क्योंकि यह उनके परम्परागत विश्वास से भिन्न है।

(2) सतावः-

गाँव में कुछ कट्टर किस्म के व कुछ व्यापारी होते हैं जिनका धंधा इसी पर निर्भर होता है। ये दोनों मिलकर प्रचारक पर सताव लाते हैं जिससे कि वह कार्य करना बन्द कर दे।

(3) सामाजिक परम्पराएंः-

गाँव की सामाजिक परम्पराएं भी ग्रामीण सुसमाचार प्रचार में बाधा आती हैं।

(4) सामाजिक स्तरीकरणः-

ग्रामीण सुसमाचार प्रचार में एक बाधा सामाजिक स्तरीकरण भी है जिसके कारण एक स्तर दूसरे स्तर से सम्बन्ध नहीं बना पाता।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-8

मौखिक सुसमाचार प्रचार

सेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमः-

मौखिक संस्कृति के लोग निम्नलिखित माध्यमों से ज्ञान प्राप्त करते हैंः-

- कथा
- कहावतें
- नाटक
- गीत
- जबानी सुनने से

ये लोग अशिक्षित होते हैं जो पढ़ना लिखना नहीं जानते हैं। “हमारा दिल ही हमारी किताब है जो हम सुनते है उसे अपने दिल में उतार लेते है।”

पूर्वजों ने कहानियों के माध्यम से ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया। प्राथमिक कलीसिया की एक संस्कृति थी कहानी के माध्यम से सुसमाचार सुनाना। अनपढ़ लोग सुनते हैं और सुने हुए को बार-बार दुहराकर याद करते हैं। इन्हें सुनाने के लिए पारम्परिक संगीत और नाटक का उपयोग किया जा सकता है।

परिपक्व मसीही होने के लिए क्या साक्षर होना आवश्यक है? नहीं।

सेतु बांधनाः-

- पारंपरिक मौखिक संस्कृति को समझें।
- गीत, कहानी का उपयोग करें।
- स्थानीय भाषा का प्रयोग करें।
- यीशु एक कहानी सुनाने वाले इस उदाहरण का उपयोग करें।
- पवित्र शास्त्र की कहानी और संवाद का उपयोग करें।
- कलीसिया स्थापना और धर्मप्रचारक दल बनाएं।
- कलीसिया स्थापना की गोल प्रक्रिया का अनुसरण करें।
- प्रभु की कहानी उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक बताएं।
- नाटक एवं यीशु की नीतिकथा का उपयोग करें।

- कहानी बताने के द्वारा शिष्य और अगुवे बनाएं।
- पवित्र शास्त्र का सांस्कृतिक अनुकूलन करें।
- पवित्र शास्त्र को स्थानीय संगीत में ढालकर उनका उपयोग करें।
- पवित्र शास्त्र के गीत और संगीत सेतु बनाने में मददगार हैं।
- हमारा हृदय हमारी किताब है।

सेतु बांधने के दस कदमः-

1- हमारा कार्य यह है कि हम संचार सेतु बांधेंः-

शिक्षित लोग पुस्तक से सीखते हैं परन्तु अशिक्षित लोग बोलचाल से सीखते हैं।

- लोगों की मौखिक संस्कृति के अनुसार संवाद होते हैं। जिन्हें वे सुनते, समझते, विश्वास करते और अपने हृदय में उतार लेते हैं।
- जो सुना या देखा है उसको बार-बार दोहराकर सीखते हैं।
- कहानी सुनाने के बाद पूछते हैं कोई है जो कहानी फिर से अपने अंदाज में सुना सकता है।
- बच्चे जो कहानी सुनते हैं उन्हें वह कहानी हूबहू याद रहती है।
- नाटक और गीत संचार के सही माध्यम हैं।
- लोग पवित्र शास्त्र को सुनकर याद कर लेते थे।
- लोग जो कुछ सुनते हैं उसे याद करके औरों को सुनाते हैं।

2- मातृ भाषाः-

- स्थानीय भाषा का उपयोग करें।
- स्थानीय लोगों में से कुछ लोगों को चुनकर सुसमाचार प्रचार के लिए तैयार कर सकते हैं।
- स्थानीय संस्कृति का उपयोग करें।
- राष्ट्र भाषा की जगह लोगों की मातृभाषा का उपयोग करें।
- लोगों को सुसमाचार उनकी अपनी भाषा में मिलना चाहिए।
- अगुवों को स्थानीय भाषा का उपयोग, कहानी के माध्यम से सुसमाचार सुनाना सिखाना चाहिए।
- स्थानीय भाषा का उपयोग सुसमाचार को लोगों के दिल तक पहुंचा देता है।

3- 'यीशु एक कहानी सुनाने वाले थे' इस उदाहरण का उपयोग करेंः-

- याद किए गए पाठ सिखाना।
- लोगों की भाषा में सिखाना।

Creation Autonomous Academy

- अशिक्षितों को सिखाना।
- प्रभु यीशु कहानियों के माध्यम से सत्य को समझाते थे।
- लोगों की संस्कृति के अनुसार अपना संदेश देते थे।
- लोगों की आवश्यकता से जुड़ी कहानियों का चुनाव करके सुनाते थे।
- प्रभु के शिष्य भी कहानी सुनाते थे।
- लोगों को प्रोत्साहित करना है कि प्रभु यीशु की तरह कहानी के माध्यम से संदेश सुनाएं।
- कहानी सुनाना संसार की सबसे पुरानी कला है।

4- यात्रा के लिए कहानियां:-

- पवित्र शास्त्र की कहानी का उपयोग करें।
- कहानी सुनाने के बाद, लोगों को कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें।

1- उचित कहानी चुनें। पश्चात्ताप विषय पर जक्कई की कहानी।
2- कहानी की रचना को याद करें। कहानी का प्रारम्भ, बीच और अंत।
3- दृश्य सोचें। दृश्य के बारे में सोचें और कल्पना करें।
4- क्रियाकलाप। कहानी के क्रियाकलाप के बारे में सोचें।
5- परियोजना। योजना के प्रतिरुप के लिए अपनी आवाज का उपयोग करें।
6- याद करें। कहानी को अच्छी तरह से याद कर लें।
7- कहानी दोहराएं, बताएं। कहानी को बार-बार दोहराते रहें जब तक कि कहानी याद नहीं हो जाती।

5- संवाद का उपयोग:-

संवाद का उपयोग करना सीखना चाहिए।-

1-पुनरावलोकन
2-संस्कृति
3-सही कहानी फिर सुनाने को कहें।
4-पुनः पुनरावलोकन
5-ध्यानपूर्वक व्यवहार
6-विचार के समय का सही उपयोग करें।

6- कलीसिया स्थापक एवं प्रचारक दल बनाएं:-

- जिन्हें बाहर भेजा गया।

Creation Autonomous Academy

- अलग-अलग लोगों को अलग-अलग जिम्मेदारी दें।
- धर्मप्रचार में व्यस्त रहें।
- आवश्यकता महसूस कराएं।
- स्थानीय लोगों को कार्य में शामिल करें।
- भेजे जाने वाली एक टीम बनाएं।
- कलीसिया स्थापना करने वाली टीम में अनेक वरदानों वाले लोग होते हैं।

मौखिक संस्कृति के विभिन्न समाजों में कहानी सुनाने वाले को धर्मप्रचारक से अलग रुप में देखा जाता है।

- लोगों से सम्बन्ध बनाएं, उनके विश्वास को जीतें।
- शांति चाहने वाले को खोजें।
- शांति चाहने वाला व्यक्ति सेतु बांधने में सहायक हो सकता है।
- स्थानीय लोगों के जाने बूझे तरीकों से प्रचार करें जिससे कि लोगों से रिश्ते बनें।
- समुदाय के अगुवों से अच्छे रिश्ते बनाएं।
- कहानी सुनाएं, कहानी सुनने वाले को कहानी सुनाने भेजें।
- कहानी को गीतों में ढाल कर गाएं।

गाने गाना, कहानी सुनाना, प्रार्थना करना और अंत में कलीसिया स्थापना करना। ऐसे कार्य करने वाला दल बनाएं।

7- कलीसिया स्थापना की गोल प्रक्रिया का अनुसरण करें:-

गोल यात्रा

- समुदायों के लोगों को मसीह को अपनाने हेतु प्रार्थना करें।
- नए विश्वासी को अपना विश्वास बांटना सीखना चाहिए।
- कलीसिया स्थापित करने हेतु अच्छे शिष्य बनाना।

Creation Autonomous Academy

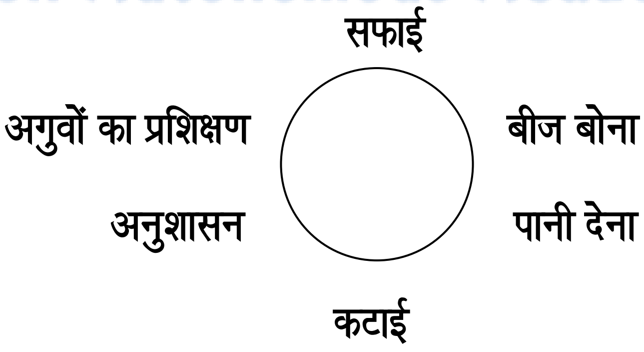

1- सफाई करना: यह प्रार्थना करने और रिश्ते बनाने का समय है।

- लोगों के धार्मिक विचार एवं बाधाओं को जानने का समय है।
- हम वहां सामुदायिक कार्य कर सकते हैं।
- संवाद, कहानी सुनायी जाए।
- वीडियो के माध्यम से कहानी दिखा व सुना सकते हैं।
- लोगों की स्थिति के अनुसार कहानी का चुनाव करना चाहिए।

2- बीज बोनाः कहानी के माध्यम से सुसमाचार सुनाना।

3- पानी देनाः सभाएं बुलाकर संवाद के माध्यम से लोगों के प्रश्नों के उत्तर दें। कहानी सुनाएं। ऐसे माध्यम अपनाएं जिन्हें छोटे-छोटे ग्रुपों व घर-घर में अपनाया जाए।

4- कटाईः जब लोग निर्णय लेते हैं, मसीह को अपनाते हैं।

- सुनी गयी कहानियों में जो लोगों को सबसे अधिक पसन्द हो उस कहानी को फिर से सुनाएं।
- सम्पूर्ण परिवार को मसीह में लाएं।
- समाज से बहिष्कार का खतरा है जिसका सामना करना लोगों को सिखाया जाए।

5-अनुशासनः यह फसल भण्डार गृह में ले आने का समय है।

- मसीह के शिष्यों की कहानियों को सुनाएं व लोगों को उनके जैसा शिष्य बनने हेतु प्रोत्साहित करें।
- कहानी सुनाने, अपने विश्वास को औरों के साथ बांटने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करें।

6-अगुवों को चुनकर प्रशिक्षित करें। फसल का अच्छा हिस्सा पहचान कर अलग करके रखना। अच्छे लोगों को पहचानें। अगुवों को पहचान कर उन्हें प्रशिक्षित करें।

8- कहानी सुनाने वाले की यात्रा धर्मशास्त्र के जरिएः-

धर्मशास्त्र कहानियों का संग्रह है। ये परमेश्वर के प्रकाशन की कहानियां हैं। बाइबल का 75 प्रतिशत वर्णनात्मक, 15 प्रतिशत कविताएं और 10 प्रतिशत भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक हैं।

- दुर्भाग्यवश आजकल कलीसिया पूरी कहानी को नहीं सुन पाती है।
- सही वक्त पर सही कहानी चुनें।
- कहानी की निरन्तरता बनाए रखें।
- कहानी क्रम से सुनाएं।

- उत्पत्ति
- अब्राहम
- भविष्यद्वक्ता
- यीशु की कहानी
- परमेश्वर के समुदाय की कहानी
- अगुवों की कहानी

- 40 से 50 कहानियों की सूची बना लें।
- कहानी के बीच तालमेल बना रहे।
- मौखिक पवित्र शास्त्रः अर्थात पवित्र शास्त्र को कहानी के माध्यम से सुनाना।
- चित्र सहायक पुस्तक का उपयोग करें।
- उचित कहानी चुनें जो लोगों की आवश्यकता के अनुसार हो।
- नीति कथा का उपयोग करें।
- यीशु की नीति कथा और नाटक का उपयोग करें।
- दृष्टांत अभी भी उपयोगी हैं।
- आज भी हम स्थानीय संस्कृति में ढालकर दृष्टांतों को लोगों को सुना सकते हैं।
- दृष्टांत जुबानी संस्कृति की प्राचीन शैली है।
- पवित्र शास्त्र के ऐतिहासिक सत्य बिना फेर बदल के बताए जाने चाहिए।
- रचनात्मक तरीका अपनाएं।
- आवश्यकता के अनुसार दृष्टांत सुनाएं।
- स्थानीय लोगों के नाम, कपड़ों, परिवहन का उपयोग करें।
- कहानी को ऐसे सुनाएं जैसे वह उसी इलाके में घटी हो।
- दृष्टांतों को कहानी व नाटक के माध्यम से सुनाया जा सकता है।
- नाटक दल में गांव के लोगों को शामिल कर सकते हैं।
- दृष्टांतों, कहानियों का नाट्य रुपांतरण कर सकते हैं।
- सावधानी बरतें कहानी व नाट्य रुपांतरण में हम मौलिक संदेश को न बदलें।

9- यीशु का अनुकरण करनाः-

- कहानी बताने के द्वारा शिष्य और अगुवे बनाएं।
- नए विश्वासियों को कहानी सुनाने की शैली सिखाएं।
- सात कहानी सात सिद्धांत

Creation Autonomous Academy

1- **पश्चाताप और विश्वासः** जक्कई

2- **बपतिस्माः** प्रभु यीशु मसीह

3- **प्रेमः** सामरी यात्री

4- **प्रभु भोजः** प्रभु का शिष्यों के साथ भोज

5- **प्रार्थनाः** प्रभु के शिष्यों के साथ प्रार्थना

6- **देना सीखनाः** गरीब विधवा की कहानी

7- **विश्वास को बांटकर औरों को शिष्य बनाएंः** प्रेरित

- पुनरावलोकन
- सांस्कृतिक अनुरुप द्वारा कहानी बताएं।
- सुनने वाले को कहानी फिर से सुनाने को कहें।
- कहानी में फेर बदल न करें।
- प्रश्न पूछना जिससे कि कहानी का श्रोता पुनरावलोकन कर सकें।
- ऐसे प्रश्न पूछना जिससे पता चल सके कि श्रोता कितना समझ गए हैं।
- ध्यानपूर्वक व्यवहार करें, किसी को ठेस न पहुंचाएं।
- श्रोता से विश्वास का रिश्ता बनाने में विचार का सही उपयोग करें।
- प्रभु यीशु का और प्राथमिक कलीसिया के अगुवों का अनुकरण करें।
- अगुवों को प्रशिक्षित करें, विश्वास की मिशाल बनें।
- पवित्रशास्त्र को अगुवों की कहानी सुनाकर हम अगुवों को तैयार कर सकते हैं।
- शिष्यगणों को तैयार करें, अगुवों को प्रशिक्षित करें।

10- प्रभु के लिए एक नया गाना गाओः-

- सांस्कृतिक अनुरुप द्वारा परिचय कराओ।
- संगीत का उपयोग करें।
- मौखिक संस्कृति के लोगों से हम गीत संगीत के माध्यम से वार्तालाप कर सकते हैं एवं एक पुल बना सकते हैं।
- पवित्रशास्त्र को मातृभाषा के जरिए संगीत शैली में ढालकर उपयोग करें।
- किस समय कौन सा संगीत उपयोग करें अथवा न करें, यह स्थानीय लोगों के निर्णय के आधार पर निश्चित करें।
- स्थानीय संगीतकार को गाना लिखने में उपयोग करें।
- संगीत एवं वाद्य का कोई लेना देना भूत प्रेत, मूर्तिपूजा से नहीं होता, यह संस्कृति का मामला होता है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय -9

जनसमूह सुसमाचार-प्रचार

यदि हम जनसमूह को सुसमाचार सुनाना चाहते हैं, तो सर्वप्रथम उनके विश्वास और हमारे विश्वास के बीच मिलन बिन्दु को जानें। जैसे यूहन्ना ने यूनानियों और इब्रियों को एक साथ सुसमाचार सुनाने के लिए यूनानियों के बारे में जानकारी हासिल की। उसने दोनों के विश्वासों का एक मिलन बिन्दु खोज निकाला।

1- मिलन बिन्दु :-

भारतीय जनसमूह व मसीहियत के बीच मिलन बिन्दु मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण, नजात हैं इन सबका एक ही अर्थ है उद्धार। सभी भारतीय उद्धार की खोज में हैं जिसे पुल बनाकर सुसमाचार सुनाया जा सकता है।

2- सुसमाचार-प्रचार करने की पद्धतिः-

सुसमाचार-प्रचार करने के लिए क्या पद्धति अपनायी जाए? इस विषय पर विचार करना भी अत्यन्त आवश्यक हैः-

1. जनसमूह को जनसमूह के प्याले में चाय पिलाएंः-

संस्कृति और सभ्यता का ध्यान रखते हुए लोगों को सुसमाचार प्रचार करें।

2. आलोचना नहीं, मेल-मिलाप का प्रचार करेंः-

खण्डन-मण्डन, शास्त्रार्थ में न फँसे इससे किसी का लाभ न होगा। (मत्ती 10:14, लूका 10:10-11) धर्मशास्त्रों, आस्था एवं देवी-देवताओं आदि की आलोचना न करें। परमेश्वर के मेल-मिलाप के संदेश का प्रचार करें।

3. प्रचार हेतु धर्मशास्त्रों के उद्धरण प्रयोग करेंः-

सुसमाचार-प्रचार हेतु उनके धर्मशास्त्रों का अध्ययन करके उपयोगी अंशों पर निशान लगा लें व उपदेश में उनका उपयोग करें। प्रचलित काव्य में से भी पढ़कर उपयोगी अंश को छाँटकर उन पर निशान लगा लें, उपयोगी मुहावरों, कहावतों, लोकोक्तियों, कहानियों को भी चुन लें। इन सभी का उपयोग सुसमाचार में समयानुसार करें।

4. खोए हुओं को बचाने का लक्ष्य लेकर जाएंः-

खोए हुओं को खोजने एवं बचाने का लक्ष्य लेकर जाएँ।

5. विश्वास को ठेस न पहुँचाएंः-

आदिवासियों का मानना है कि मिशनरियों ने उनके विश्वास को सही तरीके से नहीं समझा और उसका गलत उल्लेख किया। हमें इस बात का ध्यान रखना चहिए कि हम सुसमाचार सुनाएँ, लेकिन बिना आदिवासियों के विश्वास को ठेस पहुँचाए हुए। यही सुसमाचार प्रचार के लिए आवश्यक है।

6. संस्कृति को ध्यान में रखकर प्रचार करेंः-

आदिवासी संस्कृति को कोई नुकसान न पहुँचे इसका भी हमें ध्यान रखना है। सुसमाचार के दौरान शब्दों के उपयोग पर भी सावधानी रखनी होगी। जो शब्द वे उपयोग करते हैं उनका सही अर्थ समझते हुए और सही तरीके से ही उपयोग करें।

7. आलोचना नहीं परमेश्वर के वचन का प्रचार करेंः-

आदिवासी प्रकृति प्रेमी हैं इसलिए उनके प्रकृति प्रेम की आलोचना से बचें। आलोचना से लाभ तो नहीं होता परन्तु हानि अवश्य होती है।

8. अखड़ा शैली का उपयोगः-

आदिवासियों के बीच सुसमाचार-प्रचार के लिए उनकी संस्कृति की अखड़ा शैली का उपयोग करना चहिए। अखड़ा शिक्षा का केन्द्र है। अखड़ा को स्थापित करने, इसे बनाये रखने के प्रति आदिवासी सचेत हैं। जैसे प्रभु ने यहूदी आराधनालयों का उपयोग किया वैसे ही हमें अखड़ा का उपयोग करना चहिए।

9. लोक कथा शैली का उपयोगः-

आदिवासियों का धर्म गीतों, लोक कथाओं से भरा है, परन्तु ये लिखित नहीं हैं फिर भी सुनकर जानकारी प्राप्त की जा सकती है। हम जो कर सकते हैं सुसमाचार-प्रचार के लिए उस शैली का प्रयोग कर सकते हैं।

Creation Autonomous Academy

3- सुसमाचार-प्रचार का स्वरूपः-

किन-किन रूपों में हम सुसमाचार-प्रचार कर सकते हैं?ः-

(1) सत्संगः-

सत्संग में इलाके के लोगों को इकट्ठा किया जाता है। यह भजन-कीर्तन के साथ आराधना से आरम्भ होता है। इसमें पूर्व-निर्धारित उपदेशक उपदेश देता है। सत्संग कुछ समय, एक दिन और कई दिनों का भी होता है। समयानुकूल आप उचित समय उपयोग कर सकते हैं।

जब लोग इकट्ठा हो जाएं तो भजन-कीर्तन के साथ आराधना आरम्भ करें। तत्पश्चात सरल शब्दावली में परमेश्वर के वचन से उपदेश दें। सत्संग के दौरान कितने भजन गाए जाएं इसका कोई निश्चित नियम नहीं है। उपदेशक का संकेत मिलते ही उपदेश के बीच -बीच में भी भजन गाए जाते हैं।

(2) पाठः-

पाठ में पाठ कर्ता शास्त्र से क्रमपूर्वक पाठ पढ़कर सुनाता है। पाठ समाप्त होने पर यदि कोई व्यक्ति प्रश्न करता है तो वह उसके प्रश्न का उत्तर देते हुए उसे समझाता है। अखण्ड पाठ में बिना रुके 24 घंटे शास्त्र का पाठ किया जाता है। समाप्ति पर आराधना होती है व उपदेश दिया जाता है। लोगों के बीच बाइबल पाठ किए जाएं जिससे कि लोग श्रवण भक्ति का लाभ उठा सकें।

(3) सप्ताहः-

प्रतिदिन प्रातः, दोपहर, संध्या को पूर्व निर्धारित उपदेशक द्वारा पवित्र शास्त्र पढ़कर उसका अर्थ समझाया जाता है। यह एक सप्ताह तक निरन्तर चलता रहता है समाप्ति पर सामूहिक आराधना होती है व उपदेश दिया जाता है। बाइबल खण्डों को योजनाबद्ध रुप से पढ़कर उनका अर्थ समझाया जाए। लोगों के समक्ष बाइबल व्याख्यान प्रस्तुत करें जिससे कि लोग स्पष्ट रुप से सुसमाचार सुन सकें।

(4) कथाः-

कथा का प्रचलन है। कथा वाचक, कथा को अंश-अंश करके पढ़ता है और उनका अर्थ लोगों को समझाता जाता है। समाप्ति पर आराधना होती है। जिसके घर में कथा होती है वह कथा सुनने के लिए अपने कुटुम्बियों और पड़ोसियों को बुलाकर इकट्ठा करता है। प्रतिदिन किसी न किसी घर में कथा होती रहती है। प्रतिदिन किसी न किसी विश्वासी के घर में बाइबल को पढ़कर क्रम से खण्डों की व्याख्या की जाए। बाइबल से कहानी तैयार कर कहानी सुनाते हुए सुसमाचार सुनाएं। यह आत्मिक बातों की तरफ लोगों की रुचि को बढ़ाता है।

Creation Autonomous Academy

(5) शिक्षाः-

शिक्षा हेतु गुरू अथवा किसी संत को बुलाया जाता है जो कि निर्धारित समयानुसार शिक्षा प्रदान करता है। लोग उसके पास शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। अगुवों को चाहिए कि वे बाइबल से व्यवहारिक शिक्षा समय समय पर लोगों को प्रदान करें। वचन की शिक्षा लोगों के मनों को परिवर्तित करेगी एवं उनके आत्मिक जीवन को मजबूत करेगी। लोगों को सिद्धान्तों की शिक्षा प्रदान करें।

(6) उत्सवः-

जन उत्सवों के माध्यम से आम लोगों तक शिक्षाएँ पहुँचायी जाती हैं। क्रिसमस, गुड फ्राइडे, ईस्टर के अवसर पर बाइबल से शिक्षा प्रदान की जाए। राष्ट्रीय पर्वों जैसे स्वतंत्रता दिवस-15 अगस्त, गणतंत्र दिवस-26 जनवरी का उपयोग किया जा सकता है।

(7) आध्यात्मिक सम्मेलनः-

आध्यात्मिक सम्मेलनों के माध्यम से बड़ी संख्या में लोगों तक शिक्षा व संदेश पहुँचाया जाता है। बाइबल की शिक्षा देने के लिए सम्मेलन आयोजित किए जाएं। सामूहिक सुसमाचार सुनाने के लिए समयानुसार आध्यात्मिक सम्मेलनों को संगठित करें।

4- सुसमाचार-प्रचार करने वाले की तैयारी :-

सुसमाचार-प्रचार करने वाले प्रचारक को प्रचार से पहले तैयारी करना आवश्यक है:-

(1) प्रार्थनाः-

इसके लिए प्रार्थना अति आवश्यक है। प्रार्थना में प्रचारक परमेश्वर से मार्गदर्शन व सहायता प्राप्त कर लें।

(2) वचन अध्ययनः-

पवित्र बाइबल से जिस खण्ड से प्रचार करना हो उसका गहराई से अध्ययन कर लें। हमें खण्ड को लोगों को समझाना है इसलिए स्पष्ट भावार्थ हमें ज्ञात होना चहिए।

(3) परमेश्वर पर निर्भरताः-

प्रचारक पूर्ण रूप से परमेश्वर पर निर्भर हो और पवित्र आत्मा की अगुवाई और मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करे।

प्रचारक अपने ऊपर परमेश्वर का नियंत्रण स्वीकारे।

Creation Autonomous Academy

प्रचार का नमूना
सब उद्धार प्राप्त करें!

प्रस्तावनाः-

सभी को उद्धार प्राप्त करने की आवश्यकता है। अवश्य है कि सब उद्धार प्राप्त करें।

1- सारा संसार पापी हैः-

मानव की सबसे भयंकर समस्या उसका पाप बन्धन है। पाप परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति उल्लंघनकारी स्वभाव है। 1 यूहन्ना 3:4 पवित्र ग्रंथ बाइबल के अनुसार पाप की गहनता सर्वव्यापी है। **'क्योंकि सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए हैं।' रोमियों 3:23** अर्थात सब पापी हैं। स्वभाव में पाप का बीज मौजूद है।

2- पाप पर दण्ड का आदेश हैः-

पवित्रशास्त्र बाइबल बताती हैः **'पाप की मजदूरी मृत्यु है।** रोमियों 6:23

3- अपने प्रयास से उद्धार सम्भव नहीं हैः-

पाप स्वभाव से छूटना मानवीय प्रयासों से असम्भव है।

4- उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से ही संभव हैः-

उद्धार परमेश्वर की दया उसके अनुग्रह से ही संभव है। रोमियों 5:1-11

5- प्रभु यीशु ने हमारे बदले दुःख और मृत्यु सहाः-

तारणहार परमेश्वर प्रभु यीशु के रुप में देहधारी हुआ। वह इसलिए प्रकट हुआ कि मानव जाति के कर्मदण्ड तथा मृत्युबन्ध को सदा-सदा के लिए क्रूस पर स्वयं भोग ले। यह करके उसने कहा 'पूरा हुआ' और अपने प्राण त्याग दिए। वह मारा गया, गाड़ा गया और तीसरे दिन जी उठा ताकि वे सब नर नारी जो उसकी शरण में आएं, अपनी पाप और मृत्यु की दासता से सदा सदा के लिए स्वतन्त्र हो जाएं। यशा० 53:1-9, रोमि० 5:8-11, प्रका० 1:5

Creation Autonomous Academy

6- प्रभु यीशु पर विश्वास द्वारा मोक्ष हैः-

परमेश्वर ने जगत् से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनंत जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16) मैं तुमसे सच-सच कहता हूं,

जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, पर मृत्यु से पार होकर वह जीवन में प्रवेश कर चुका है। यूहन्ना 5:24

7- इसी जीवन में मोक्ष प्राप्त करेंः-

मनुष्य का एक बार मरना और न्याय होना है, इसलिए इसी जीवन में मोक्ष प्राप्त करें।

उपसंहारः-

प्रभु यीशु बुला रहे हैंः-

‘हे सब थके और बोझ से दबे लोगों मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।’ मत्ती 11:28

Creation Autonomous Academy

अध्याय-10

परमेश्वर का परिवार की स्थापना

परमेश्वर का परिवार क्या है? परमेश्वर का परिवार कोई इमारत नहीं है। ‘‘ परमेश्वर का परिवार उन विश्वासियों का समूह है जिनका नया जन्म हुआ है, और जो परमेश्वर की अगुवाई तथा पवित्र आत्मा की सामर्थ में परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी हैं।’’

सुसमाचार-प्रचार व परमेश्वर का परिवार स्थापना में सम्बन्धः-

सुसमाचार प्रचार, परमेश्वर का परिवार की स्थापना एवं परमेश्वर का परिवार वृद्धि में आपसी सम्बन्ध है। सुसमाचार-प्रचार कलीसियाई जीवन का केन्द्रबिन्दु है।

सुसमाचार का परिणामः-

सुसमाचार-प्रचार का लक्ष्य प्रभु यीशु की महान आज्ञा का पालन करना है। (मत्ती 28:18-20) इस लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जाए?

1- एक प्रचारक किसी भी स्थान व लोगों के बीच रहता है और उनको समझता है तथा उन्हें साक्षी देता है।

2- इसके पश्चात् वह उन्हें शिक्षा व निर्देश देने के पश्चात् उन्हें बपतिस्मा देता है।

3- बपतिस्मा देने के पश्चात् वे मण्डली या आराधक के रुप में संगठित होते हैं। मण्डली में उनको सिखाया जाता है कि वे प्रभु यीशु की आज्ञा में शिष्यता का जीवन बिताएँ।

4- एक आराधक मण्डली की स्थापना के पश्चात् उन्हें संगति, प्रार्थना, बाइबल-अध्ययन तथा साक्षी देने के लिए तैयार किया जाता है। यह स्थापित कलीसिया अपने आदर्श व साक्षी से अन्य कलीसियाओं की स्थापना करती है। यह वृद्धि संख्या तथा गुण (आत्मिक) दोनों रुप से होना चाहिए।

परमेश्वर का परिवार स्थापना के सिद्धन्तः-

(1) गैर-मसीहियों को जीतने की प्राथमिकता बनाएंः-

एक सेवक की प्राथमिकता आत्माओं को जीतना होना चाहिए। कलीसिया में अनेक कार्य हैं परन्तु सबसे पहले स्थान पर आत्माएँ बचाने का कार्य है।

(2) खुले हृदय वाले समूह को खोजें व पाएंः-

प्रभु अपनी योजना में ऐसे समूहों को तैयार करते हैं जो प्रभु को ग्रहण करने के लिए तैयार होते हैं। (यूहन्ना 6:44)

(3) खुले समूह पर ध्यान दें:-

बहुत से सेवक समूह अनकों गतिविधियों में शामिल होते हैं, परन्तु किसी विशेष समूह पर अपनी शक्ति व समय नहीं लगाते। केवल निशाना लगाकर भाग जाना पर्याप्त नहीं है। उस विशेष समूह के साथ समय बिताना और उनमें रहकर प्रभु के लिए कलीसिया स्थापित करना है।

(4) अस्वीकार करने वाले समूह को साक्षी देते रहें:-

ऐसे समूह जो सुसमाचार को स्वीकार करने में हिचकिचाहट महसूस करते हैं उन्हें साक्षी देते रहें, और प्रभु पर आशा लगाए रखें और प्रार्थना करते रहें कि वह उचित समय पर उनके हृदयों को सुसमाचार के लिए खोले (यशा० 55:10-11)

(5) परमेश्वर का परिवार वृद्धि का उद्देश्य रखें:-

यह परमेश्वर की इच्छा है (1 तीमु० 2:3-4)। प्रभु यीशु ने न केवल एक ही व्यक्ति परन्तु समूह में भी रुचि ली (मत्ती 9:36-38)। एक सेवक को न केवल एक या दो व्यक्तियों को प्रभु के पास लाना चाहिए परन्तु पूरे परिवार, संयुक्त परिवार, समूह व समुदायों को भी प्रभु के पास लाना चाहिए। परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दोनों ही एक स्वस्थ कलीसिया के द्योतक हैं। वे शरीर की दो आखों के समान है।

(6) सामूहिक निर्णय हेतु प्रयास करें:-

भारतीय परिप्रेक्ष्य में संयुक्त परिवार व समान जाति के लोगों का निर्णय महत्वपूर्ण है। साहस, संगति, मनोबल, शक्ति, विवाह-सम्बन्ध, एक सुदृढ़ कलीसिया की स्थापना, दूसरी जातियों के लिए गवाही सामूहिक निर्णय के फायदे हैं। इसमें कुछ कमजोरियाँ भी पायी जाती हैं। जैसे- नामधारी मसीहियत, विश्वास से पीछे हटने की प्रक्रिया। इसके लिए लगातार शिक्षा की जरुरत होती है।

(7) निरन्तर लगे रहें:-

Creation Autonomous Academy

एक पड़ाव पार करने के बाद, एक विजय हासिल करने के बाद, प्रायः ऐसा देखने को मिलता है कि लोग आराम फर्माने लगते हैं। परन्तु हमें निरन्तर कार्य में लगे रहना चाहिए।

अध्याय-11

परमेश्वर का परिवार की स्थापना की विधियां

किसी भी कार्य में मात्र सिद्धान्तों से काम नहीं हो पाता। उस सिद्धान्त को व्यवहार में उतारने वाली विधियों की भी आवश्यकता होती है।

परमेश्वर का परिवार स्थापना की विधियां निम्नलिखित हैंः-

1- परमेश्वर से मार्गदर्शन माँगें।
2- अपनी टीम को तैयार करें।
3- लोगों को पहिचानें।
4- उन लोगों के लिए प्रार्थना करें।
5- जिज्ञासुओं का पता लगाएं।
6- जिज्ञासुओं को सुसमाचार सुनाएं।
7- विश्वासियों का पता लगाएं।
8- संस्कारित करें व सदस्य बनाएं।
9- उन्हें परिपक्व बनाएं।
10- संगति आयोजित करें।
11- सेवा हेतु उत्साहित करें।
12- योग्य अगुओं को चुनें और तैयार करें।

1- परमेश्वर से मार्गदर्शन माँगेंः- परमेश्वर के मार्गदर्शन को पाने के लिए हमें उससे प्रार्थना करनी चाहिए वह हमें सही व अपने चुने हुए स्थान पर ले जाए और अपनी सेवा ले।

2- अपनी टीम को तैयार करेंः- कलीसिया के बीच से कलीसिया स्थापना करने वाली टीम बनाएं और प्रार्थनापूर्वक उसे सिखाते हुए तैयार करें जैसा प्रभु ने प्रेरितों को तैयार किया था। इसी तरीके का अनुसरण पौलुस ने भी किया था।

3- लोगों को पहिचानेंः- स्थानीय लोगों, उनकी संस्कृति, रहन-सहन, वातावरण एवं प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में जानें तथा उसी के अनुसार योजना बनाएं।

4- उन लोगों के लिए प्रार्थना करें:- उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें कि परमेश्वर उनके मनों को तैयार करे ताकि वे सुसमाचार को भलीभांति समझ सकें और प्रभु के शिष्य बनने का निर्णय ले सकें।

5- जिज्ञासुओं का पता लगाएं:- जिन लोगों के लिए प्रार्थना की गई है उनमें से जिज्ञासुओं का पता लगाएं, उनसे सम्पर्क करें और उनके साथ मित्रता स्थापित करें।

6- जिज्ञासुओं को सुसमाचार सुनाएं:- मित्रता स्थापित करने के बाद प्रेमपूर्वक, नम्रमापूर्वक एवं धैर्यपूर्वक उन्हें सुसमाचार सुनाएं और लगातार उनसे सम्पर्क बनाए रखें। साथ ही साथ उनके लिए प्रार्थना भी करते रहें।

7- विश्वासियों का पता लगाएं:- जिन लोगों ने विश्वास कर लिया है उनका पता लगाएं और उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें और उनका स्वागत करें।

8- संस्कारित करें व सदस्य बनाएं:- उन विश्वासियों को संस्कारित करते हुए स्थानीय कलीसिया के सदस्य बनाएं।

9- उन्हें परिपक्व बनाएं:- स्थानीय कलीसिया में उन्हें वचन की शिक्षा देते, उनके साथ संगति रखते, रोटी तोड़ते और उनके साथ प्रार्थना करते हुए उन्हें परिपक्वता में बढ़ाएं।

10- संगति आयोजित करें:- स्थानीय स्तर पर उनके लिए उनकी संस्कृति एवं भाषा में नियमित आराधना-सभाएं आयोजित करें जिससे कि उन्हें अपनापन मिल सके और वे परमेश्वर की संगति का आनन्द उठा सकें।

11- सेवा हेतु उत्साहित करें:- सुसमाचार-प्रचार की सेवा हेतु उन्हें प्रोत्साहित करें कि वे टीम के साथ जाकर लोगों को सुसमाचार सुना सकें, और आत्माओं का फल ला सकें।

Creation Autonomous Academy

12- योग्य अगुओं को चुनें और तैयार करें:- कलीसिया के बीच से योग्य अगुओं का चुनाव करें और उन्हें तैयार करें कि वे नए-नए स्थानों पर जाकर कलीसिया स्थापना एवं उसका संचालन कर सकें।

अध्याय -12

परमेश्वर का परिवार की स्थापना में रुकावटें

परमेश्वर का परिवार स्थापना करने में अनेक बाधाएं हैं जिनका सामना परमेश्वर का परिवार स्थापना करने वाली टीम को करना पड़ता है। ऐसी बाधाओं में कुछ मुख्य बाधाएं निम्नलिखित हैंः-

1- परमेश्वर का परिवार स्थापना के स्वभाव के प्रति भ्रमः-

लोग नहीं जानते कि कैसे कलीसिया स्थापना करनी है। परिपक्व मसीही भी मात्र नामधारी मसीहियों के मध्य सेवकाई में संलग्न है। बहुत से अगुए अन्य कलीसियाओं से विश्वासियों को इकट्ठा करके अपनी कलीसिया बना लिए हैं परन्तु गैर मसीहियों के बीच सुसमाचार प्रचार नहीं करते।

2- सुसमाचार-प्रचार के उद्देश्य के प्रति भ्रमः-

एक व्यक्ति जो सुसमाचार पर विश्वास करता है, उसे केवल वहीं छोड़ देना ही काफी नहीं है। उसे कलीसिया की संगति में भी लाना अवश्य है। कलीसिया की स्थापना प्रत्येक सदस्य का महान कार्य है। हमें उस जगह कलीसिया की स्थापना करनी है जहाँ अभी तक कोई विश्वासी नहीं है।

3- सुसमाचार में रुचि लेने वालों के प्रति भ्रमः-

लोग विभिन्न आवश्यकताओं को लेकर मसीह के पास आते हैं। हमें उन पर आरोप लगाने के बजाए उन्हें सच्चा मसीही बनाने का प्रयास करना चाहिए।

उद्देश्य पूर्ण परमेश्वर का परिवार को स्थापित करें!

उद्देश्य पूर्ण कलीसिया के लिए तीन बातें आवश्यक हैं।

1- उद्देश्य को खोजना।

2- उद्देश्य को बताना।

3- उद्देश्य को लागू करना।

1- उद्देश्य को खोजनाः-

उद्देश्य अर्थात् परमेश्वर की योजना को ढूँढना आवश्यक है। कलीसिया के पाँच उद्देश्य हैंः-

1- आराधना : परमेश्वर की आराधना करना।

2- प्रचार : अविश्वासियों को सुसमाचार सुनाना।

3- संगति : परमेश्वर के परिवार में लोगों को जोड़ना।

4- शिष्यता : परमेश्वर के लोगों को शिक्षित करना।

5- सेवकाई : परमेश्वर के प्रेम को सेवा द्वारा प्रकट करना।

लोगों को लाएं, मजबूत करें एवं तैयार करके सेवा में भेज दें।

2- उद्देश्य को बतानाः-

परमेश्वर के उद्देश्य को प्राप्त करने के बाद, इसे लोगों को अर्थात् कलीसिया को बताना भी आवश्यक है।

परमेश्वर के उद्देश्य को परिभाषित कैसे करें? परमेश्वर के उद्देश्य को परिभाषित करने के लिए निम्नलिखित बातें करनी होंगीः-

1- बाइबल अध्ययन

2- कलीसिया का प्रतिरुप

3- नये नियम की कलीसियाओं का अध्ययन

4- यीशु की विशेष (महान) आज्ञा का अध्ययन

परमेश्वर का परिवार बयानः-

1- बाइबल पर आधारित हो।

2- स्पष्ट हो।

3- हस्तान्तरणीय हो।

4- मापने योग्य हो।

उद्देश्य का बयान करने हेतु निम्नलिखित बातें करें।

1- नारों का प्रयोग करें।

2- प्रतीकों का प्रयोग करें।

3- धर्मशास्त्र की शिक्षा दें।

4- कहानियाँ सुनाएँ।

3- उद्देश्य को लागू करनाः-

आराधना, प्रचार, संगति, शिष्यता एवं सेवकाई में संतुलन बनाए रखें।

समर्पण - 1- भीतरी लोग (नेतृत्व)

2, समर्पित समूह

3, कलीसिया

4, भीड़

5, समुदाय

जहाँ लोग है वहाँ से आरम्भ करें, परन्तु लोगों को प्रभु के समर्पण की तरफ बढ़ाना है। समुदाय से आरम्भ करें।

उद्देश्य पूर्ण बनाने हेतु नौ तरीकेः-

1- एक समय में एक उद्देश्य लेकर चलें।

2- प्रत्येक उद्देश्य के लिए एक कार्यक्रम बनाएं

3- प्रत्येक उद्देश्य के लिए कक्षा लगाएं।

केन्द्र के चारों तरफ रहें।

अ- सदस्य बनाना।

ब- आत्मिक परिपक्वता की खोज।

स- सेवा की खोज करना।

द- जीवन के उद्देश्य की खोज करना।

4- उद्देश्यों पर आधारित छोटे-छोटे समूह बनाएं।

5- स्वयं सेवकों को उद्देश्यों के आधार पर संगठित करें।

Creation Autonomous Academy

लोगों के बारे में पता लगाएं कि वे किस सेवा के प्रति समर्पित हैं।

6- उद्देश्यों पर प्रचार करें।

7- उद्देश्यों के पूर्ति के लिए कलीसिया का धन खर्च करें।

कलीसिया का धन आराधना, सुसमाचार-प्रचार, संगति, शिष्यता, सेविकाई के लिए खर्च करें।

8- अपने कैलेन्डर को उद्देश्य पर आधारित करें।

9- अपनी कलीसिया का आंकलन आराधना, शिक्षा, सुसमाचार-प्रचार, संगति, शिष्यता, सेविकाई के आधार पर करें।

उद्देश्य पूर्ण परमेश्वर का परिवार की चार प्राथमिकताएंः-

1- परमेश्वर के उद्देश्य

2- परमेश्वर के लोग

3- कार्यक्रम

4- मिलने का स्थान

उपरोक्त चारों का ध्यान रखना आवश्यक है।

प्रभु यीशु की सेवाः-

1- लोगों को प्रेम किया

2- लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया। यीशु की सेवा विशाल समूह को आकर्षित करती थी।

3- रोचक एवं व्यवहारिक तरीके से सिखाया।

आराधना के सिद्धान्तः-

1- विश्वासी कर सकते हैं।

2- भवन की आवश्यकता नहीं।

3- कोई सिद्ध विधि नहीं।

4- अविश्वासी आराधना को देख सकते हैं।

5- अविश्वासियों के लिए आराधना एक शक्तिशाली गवाही है।

6- अविश्वासियों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनें।

वचन को नहीं, वचन के प्रचार का तरीका बदलना है।

7- आराधना सभा लोगों के समझने लायक होना चाहिए।

8- आराधना सभा उद्देश्यों पर आधारित हो।

9- सभा के लोग प्रचार करने वाले हों। वे व्यक्तिगत रूप से इस जिम्मेदारी को लें।

Creation Autonomous Academy

10- प्रचार करने वाली सभा के लिए कोई मानक पैमाना नहीं है।

(1) उद्देश्यों पर आधारित योजना बनाएं।

(2) वातावरण तैयार करें। (क) आशा (ख) विशाल

(3) समारोह का बोध कराएं।

(4) प्रोत्साहन का वातावरण।

(5) पारिवारिक वातावरण।

(6) जो बाइबल पद आप सिखाना चाहते हैं उसे कागज पर लिख लें।

(7) लोगों को मसीह को ग्रहण करने का अवसर दें।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-14

स्थानीय परमेश्वर का परिवार की स्थापना

अब सब कुछ सीखने के बाद प्रश्न उठता है कि इसे स्थानीय परिस्थिति में कैसे लागू किया जाए? भारत में अभी भी स्थानीय स्तर पर, स्थानीय लोगों द्वारा, परमेश्वर की आराधना का ढ़ाँचा विद्यमान है। स्थानीय गांव या मुहल्ले के लोग चाहे वे किसी भी जाति या समुदाय के हों एक साथ मिलकर एक स्थान पर आराधना करते हैं। यह आराधना गांव या मुहल्ले के सभी लोगों को मान्य होती है। इस आराधना का एक याजक होता है जिसे पुजारी कहा जाता है। पुजारी के साथ आराधना को सम्पन्न करने के लिए प्रत्येक मुहल्ले से एक अगुवा होता है। ये अगुवे आराधना संचालन व सम्पन्न करने में पुजारी की सहायता करते हैं। भारत में कलीसिया स्थापना का जो तरीका अपनाना आवश्यक है। वह है स्थानीय कलीसिया की स्थापना। यह प्रेरितों की रीति के अनुसार है, साथ ही पौलुस द्वारा अपनायी गयी कार्यपद्धति के भी अनुसार है।

स्थानीय परमेश्वर का परिवार :-

"स्थानीय स्तर पर चाहे गांव, मुहल्ला या नगर हो। लोगों को सुसमाचार सुनाकर उन्हें प्रभु के राज्य में लाना, चेले बनाना और फिर पूरे गांव, मुहल्ले या नगर की स्थानीय कलीसिया स्थापित करना।" ये पूरे गांव, मुहल्ले या नगर के लोग प्रभु यीशु पर विश्वास करके अपने गांव, मुहल्ले या नगर में प्रभु की आराधना करें। भारतीय गावों में गांव के सभी लोगों की सामूहिक आराधना की पहले ही से आदत है। इसी आदत को कलीसियाई आराधना के लिए उपयोग करना है। कलीसिया परिवारों का परिवार है अर्थात कई परिवार के चेले मिलकर सामुदायिक जीवन जीते हैं व सामूहिक आराधना करते हैं। यह वे साम्प्रदायिक, जातीय, वर्णीय, सांस्कृतिक व धार्मिक भेदभाव को त्याग करके करते हैं। क्योंकि अब वे एक परिवार के सदस्य हो गए, प्रभु यीशु पर विश्वास करने के द्वारा एक परमेश्वर की संतान हो गए।

स्थानीय परमेश्वर का परिवार स्थापना का कार्यरुपः-

1- सब जातियों के लोगों को चेले बनाएं (मत्ती २८ः१९):-

गांव या नगर की सभी जातियों के लोगों को चेले बनाएं। इन चेलों के समूह को बिना किसी भेदभाव के एक साथ आराधना करना व आत्मिक जीवन जीना सिखाएं।

2-संस्कारित करेंः-

जिन्हें आपने चेला बनाया है, उन्हें बपतिस्मा देकर संस्कारित करें।

3-सिखाएंः-

जिन्हें आपने संस्कारित किया है, उन्हें वचन की शिक्षा प्रदान करें।

4-अगुवों का चुनाव करेंः-

जिन चेलों को आपने सिखाया है उनके बीच से सेवा में रुचि दिखाने वाले चेलों का चुनाव कीजिए।

5-अगुवों को प्रशिक्षित करेंः-

जिन्हें आपने अगुवाई के लिए परमेश्वर की अगुवाई में चुना है। उन्हें अगुवाई के लिए प्रशिक्षित कीजिए।

6-अगुवे नियुक्त करेंः-

जिन्हें आपने अगुवाई के लिए प्रशिक्षित किया है उन्हें अगुवे नियुक्त कीजिए।

7-आराधना सभा स्थापित करेंः-

आराधना सभा स्थापित कीजिए। इस बात के लिए प्रोत्साहित करें कि चेले सप्ताह में एक बार, किसी दिन, किसी निर्धारित समय पर आराधना करें। इस आराधना में सम्पूर्ण गाँव के चेले भाग लें। अब आवश्यकता पड़ेगी आराधना के लिए किसी एक स्थान की। गाँव में पूरे गाँव की आराधना का एक स्थान ग्रामवासी की निर्धारित संस्कृति में रची-बसी विधि है।

8- परमेश्वर का परिवार स्थापित करेंः-

एक स्वस्थ स्थानीय कलीसिया स्थापित करें। कलीसिया में प्रशिक्षित **अगुवे** हों, **वचन विश्वासयोग्यता से प्रचार** किया गया हो, **सदस्यता** हो, **संस्कार** जांचे गए हों (प्रभु भोज, बपतिस्मा आदि) और कलीसिया में **अनुशासन** हो।

Creation Autonomous Academy

आगे बढ़ेंः-

यदि एक सम्पूर्ण गाँव या नगर में कलीसिया स्थापना का कार्य पूरा हो गया है तो अगुवे नियुक्त करके उन्हें कार्य सौंपें और आप दूसरे गाँव या नगर के लिए प्रस्थान करें।

निरन्तर कार्य जारी रखेंः-

एक गाँव से दूसरे गाँव, एक नगर से दूसरे नगर कलीसिया स्थापना का कार्य निरन्तर करते रहिए। क्रमशः धीरे-धीरे बिना शोरगुल मचाये गांव, पंचायत, ब्लाक, परगना, तहसील, जिला, मण्डल एवं प्रदेश

में सुसमाचार-प्रचार कीजिए एवं कलीसिया स्थापना कीजिए। कलीसिया के अगुवों को प्रशिक्षित कीजिए उन्हें नियुक्त कीजिए।

प्रभु पर निर्भर परमेश्वर का परिवार स्थापित करें:-

परमेश्वर का परिवार अपनी आवश्यकताओं के लिए किसी व्यक्ति अथवा संस्था पर निर्भर न हो। वह आवश्यकताओं के लिए प्रभु पर निर्भर हो। इसलिए आवश्यक है कि कलीसिया को भेंट देना सिखाएँ। यह हमारी भारतीय परम्परा के अनुकूल है। कलीसिया को देने वाली कलीसिया बनाएं। दान-दशमांश और भेंटें प्रभु की कलीसिया में लायी जाएं।

आराधना भवन बनाने हेतु स्थानीय परमेश्वर का परिवार को प्रोत्साहित कीजिए:-

स्थानीय परमेश्वर का परिवार का आराधना भवन बनाने हेतु स्थानीय परमेश्वर का परिवार को प्रोत्साहित करें। जिससे कि स्थानीय परमेश्वर का परिवार आराधना भवन बनाने हेतु स्वयं दान इकट्ठा करे व स्वयं आराधना भवन का निर्माण करे। कलीसिया के सदस्य जो काम जानते हैं, जिनके पास जो कौशल है वे उसका उपयोग परमेश्वर का परिवार के आराधना भवन के निर्माण में श्रमदान करके कर सकते हैं। इस बात में नहेमायाह की पुस्तक से शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता है।

स्थानीय परमेश्वर का परिवार का जाल बिछा दीजिए:-

आज आवश्यकता है कि भारत में जगह-जगह स्थानीय परमेश्वर का परिवार स्थापित की जाएं। सम्पूर्ण भारत में स्थानीय परमेश्वर का परिवार का जाल बिछा दीजिए।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-15

परमेश्वर का परिवार की उन्नति

परमेश्वर का परिवार स्थापना के साथ-साथ परमेश्वर का परिवार की उन्नति होनी भी आवश्यक है। परमेश्वर का परिवार में ये बातें होनी चाहिएः-

1- परमेश्वर का वचनः-

‘‘चर्च कोई संस्था नहीं बल्कि जीवाणु है।’’

परमेश्वर के वचन का प्रचार किसी भी प्रचारक के जीवन का केन्द्र होना चाहिए। (1 तीमु॰ 4:9)

तीन चीज़ें जरुरी हैंः-

क- शिक्षा के माध्यम से

ख- व्यक्तिगत शिक्षा

ग- समूह में शिक्षा

ये तीनों बातें कलीसिया की उन्नति कि लिए जरुरी हैं। कलीसिया की जिम्मेदारी है कि वचन को अपने में अधिकाई से बसने दें। (प्रेरितों॰ 17:11)

2- संस्कारः-

परमेश्वर का परिवार संस्कार निम्नलिखित हैं

1- बच्चों का समर्पण

2- बपतिस्मा

3- प्रभु भोज

4- विवाह

5- दफन

3- प्रार्थनाः-

प्रार्थना भी परमेश्वर का परिवार उन्नति के लिए आवश्यक है। परमेश्वर का परिवार प्रार्थना में लवलीन रहने वाली होनी चाहिए।

4- सहभागिताः-

परमेश्वर का परिवार की उन्नति हेतु संगति का होना आवश्यक है। आपस में ‘अगापे’ अर्थात् ‘ईश्वरीय प्रेम’ करना। अगापे का मतलब है वह जैसा है उसे उसी रुप से स्वीकार करना जैसा मसीह ने हमारे साथ किया। (रोमि॰ 5:5, इब्रा॰ 13:2)

5- झूठी शिक्षा से सावधानीः-

झूठे शिक्षकों व झूठी शिक्षा से परमेश्वर का परिवार को बचा कर रखें। इसके लिए परमेश्वर का परिवार को वचन की शिक्षा से मजबूत करें।

6- परमेश्वर का परिवार प्रशासन व नेतृत्वः-

सब बातें क्रमानुसार एवं उचित रीति से की जाएं। परमेश्वर का परिवार प्रशासन को चलाने के लिए अगुवे नियुक्त करेंः-

1- अध्यक्ष (पास्टर)

2- प्राचीन (एल्डर)

3- सेवक, सेविकाएं (डीकन, डीकनेस)

कुलु॰ 1:18 परमेश्वर का परिवार का सिर प्रभु यीशु मसीह है।

1 पत॰ 5:4 प्रभु प्रधान रखवाला है। प्रधान रखवाला चरवाहे (अगुवों) द्वारा कार्य करता है।

परमेश्वर का परिवार प्रशासन हेतु अगुवों का नियुक्त किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु उन लोगों को नियुक्त किया जाए जो अगुवाई करने के योग्य हों।(1 तीमु॰ 3:1-13) अगुवाई परमेश्वर के मार्गदर्शन में हो।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-16

परमेश्वर का परिवार की वृद्धि की गति तेज करें!

परमेश्वर का परिवार को तेज गति से बढ़ाने की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने चाहिएः-

1- कटनी करें। (मर० 4:26-29)ः-

फसल की कटाई अति आवश्यक है। परन्तु कटाई के समय तक पहुँचने के लिए 6 चीजों की आवश्यकता हैः-

1- बीज बोने वाला - प्रत्येक विश्वासी
2- बीज - परमेश्वर का वचन (सुसमाचार)
3- भूमि - अविश्वासी मनुष्य
4- पवित्र आत्मा
5- समय - कटनी का समय
6- हँसिया - साधन

2- सेवा के लिए जाएं (लूका 10:1-13)ः-

- अकेले नहीं, दो-दो करके जाना है।
- खुले हृदय वाले श्रोताओं को खोजना है।
- पूरा पविार बचाया जाए।
- जब तक लोग बच न जाएं।
- जिन्हें सुसमाचार नहीं सुनाया गया है उनका पता लगाएं। वे आपके परिवार, रिश्तेदार व मित्र हो सकते हैं। उनके नामों की सूची बनाएं व उनके लिए प्रार्थना करें।

3- सुसमाचार सूनाएं (यूहन्ना 3:16)ः-

सुसमाचार अवश्य सुनाएं। यूहन्ना 3:16, रोमि० 5:8

4- गवाही दें (प्रेरितों० 1:8)ः-

आत्मा बचाने की सेवा में दो बातें आवश्यक हैंः-

1- सुसमाचार सुनाना
2- गवाही देना

गवाही देने में तीन बातें आवश्यक हैंः-

- प्रभु में आने से पहले का जीवन।
- कैसे परमेश्वर जीवन में आया।
- क्या परिवर्तन हुआ।

जब हम दूसरों को अपनी गवाही देते हैं तो उसमें उपरोक्त तीनों बातों का शामिल होना आवश्यक है।

5- मसीहियों को मसीह में उन्नत करें (2 तीमु० 3:16-17)ः-

मसीह की दस आज्ञाएंः-

1- पश्चात्ताप, विश्वास एवं अंगीकार करें।

2- बपतिस्मा लें।(प्रेरितों० 2:41-42, 8:30-38, 16:33)

3- प्रार्थना करें - निरन्तर प्रार्थना करें।

4- वचन - परमेश्वर के वचन का भोजन करें।

5- जाओ और चेले बनाओ।

6- पवित्र आत्मा से परिपूर्ण रहें। (प्रेरितों० 2,4)

7- प्रेम करें - सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करें, पड़ोसी से प्रेम करें।

8- अब पाप मत करना। (यूहन्ना 5:1-14, 8:1,11)

9- देना सीखें - लोगों की सहायता करें। (मत्ती 25:31-46)

10- प्रभु भोज - एक साथ मिलकर रोटी तोड़ें। (1 कुरि० 11:23-26)

6- परमेश्वर का परिवार को तेजी से बढ़ाएंः-

तेज गति से मसीह की परमेश्वर का परिवार को बढ़ाना है। इसके लिए भी दो बातें आवश्यक हैंः-

1- सुसमाचार सुनाना

2- वचन से आत्मिक भोजन खिलाना

Creation Autonomous Academy

वचन से आत्मिक भोजन कैसे खिलाएं (लूका 19:1-10)ः-

- खण्ड में परमेश्वर के बारे में क्या कहा गया है?
- खण्ड में मनुष्य के बारें में क्या कहा गया है?
- खण्ड में क्या आज्ञा है?
- खण्ड में क्या उदाहरण है?
- खण्ड में पाप के बारे में क्या कहा गया है?

- खण्ड में क्या प्रतिज्ञा है?

परमेश्वरः-

1. प्रभु खोये हुओं को ढूढ़ने आए (पद 10)
2. प्रभु मुक्तिदाता हैं। (पद 9)
3. यीशु पापियों को देख रहे हैं कि उन्हें बचा लें (पद 5)

मनुष्यः- कमजोरियां परमेश्वर के पास आने में बाधा हैं। दूसरों की गलतियों पर ध्यान देते हैं परन्तु अपनी गलतियों को नहीं देखते।

आज्ञाः- नीचे उतर आ प्रभु बुला रहा है।

उदाहरणः- पाप का अहसास हुआ, पश्चाताप किया, जो लिया था उसे चौगुना लौटा दिया। प्रभु का लोगों को खोजने और बचाने का उदाहरण है।

पापः- अन्याय करके लेना, कुड़कुड़ाना।

प्रतिज्ञाः- उद्धार आ चुका है।

प्रत्येक विश्वासी याजक हैं। कार्य है भेंट चढ़ाना, स्तुति करना (1 पत० 2:5)। सभी विश्वासी सुसमाचार सुना सकते हैं और कलीसिया स्थापित कर सकते हैं।

समूह में स्त्री-पुरूष दोनों थेः-

1. सुसमाचार सुनाना + गवाही देना
2. प्रार्थना करना

Creation Autonomous Academy

लोगों को सुसमाचार सुनाएं व गवाही दें। परमेश्वर की महिमा के लिए जो कार्य कर सकते हैं उन्हें करें।

7- विश्वासियों के अन्दर चरित्र निर्माण करें (1 तीमु० 3:1-7):-

चरित्र निर्माण आवश्यक है। निर्दोष, एक पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि सत्कार करने वाला, सिखाने में निपुण, पियक्कड़ न हो वरन् कोमल हो, झगड़ालू न हो, लालची न हो, घर का अच्छा प्रबन्धक, बच्चों को अधीन रखता हो, नया चेला न हो, सुनामी हो।

प्रभु यीशु ने साधारण मनुष्यों में से चेलों को चुना। चेलों के अन्दर चरित्र निर्माण किया और उन्हें परमेश्वर का परिवार विस्तार का कार्य सौंपा। यीशु मसीह में बने रहें। कुछ लोगों को चुनें और उनका चरित्र बनाने में अपना जीवन लगा दें। हम विश्वासयोग्य लोगों को खोजें। कौन आप का तिमोथी है? प्रार्थना करें ।

8- अगुवाई करेंः-

1- विश्वासयोग्य बीज बोने वालों को अपने साथ लें - बीज बोना

2- नये विश्वासियों को चेले बनाने का प्रशिक्षण दें - सिखाना

3- परमेश्वर का परिवार की स्थापना करें - परमेश्वर का परिवार स्थापना करने वाला

4- अनेक परमेश्वर का परिवार को शुरु करें - बहुत सी परमेश्वर का परिवार की स्थापना करने वाला

प्रभु के आगमन तक बहुत ही चतुराई से कार्य करते रहना है (2 तीमु० 2:2)। परमेश्वर चाहता है कि हम परिपक्व लोग बन जाएं। बहुतायत से आत्मिक सन्तान उत्पन्न करने वाले हों।

9- लक्ष्य निर्धारित करेंः-

1- उस जगह जाना है जहां तक सुसमाचार नहीं पहुंचा है।

2- कितने लोगों को सुसमाचार सुनाएंगे?

3- आप और आप का तीमोथी मिलकर कितने को सुसमाचार सुनाएंगे?

4- कितने विश्वासियों को प्रभु की दस आज्ञाएं सिखाएंगे?

5- कितने विश्वासियों को वचन सिखाएंगे?

6- क्या आप एक कलीसिया शुरु कर सकते हैं?

7- कितनी कलीसियाएं स्थापित कर सकते हैं?

Creation Autonomous Academy

अध्याय-17

स्थानीय परमेश्वर का परिवार की स्थापना की कार्यशैली

जब हम परमेश्वर का परिवार स्थापना कर रहे हैं तब हमें परमेश्वर का परिवार की गुणवत्ता पर ध्यान देना आवश्यक है। इसलिए आवश्यक है कि हम परमेश्वर का परिवार स्थापना में गुणवत्तापरक कार्यशैली का उपयोग करें।

परमेश्वर का परिवार स्थापना की परिभाषाः-

किसे एक परमेश्वर का परिवार स्थापना कहेंगे? आवश्यक है कि परमेश्वर का परिवार में-

1-अगुवे हों।

2-वचन विश्वासयोग्यता से प्रचार किया गया हो।

3-सदस्यता हो

4-संस्कार जांचे गए हों (प्रभु भोज, बपतिस्मा, आदि)

5-अनुशासन हो

1-अगुवे हों।ः-

परमेश्वर का परिवार में अगुवे होने चाहिए। जैसा कि पौलुस ने 1 तीमु० की पत्री में अध्याय 3 में बताया है। परमेश्वर का परिवार में

अध्यक्ष हो जो -

1-भला कार्य करने की इच्छा रखने वाला हो

2-निर्दोष हो

3-एक ही पत्नी का पति हो

4-संयमी हो

5-समझदार हो

6-सम्माननीय हो

7-अतिथि सत्कार करने वाला हो

8-शिक्षा देने में निपुण हो

9-शराबी न हो

10-मारपीट करने वाला न हो

11-नम्र हो

12-झगड़ालू न हो

13-धन का लोभी न हो

14-घर का अच्छा प्रबन्ध कता हो

15-अपने बच्चों को ऐसे अनंशासन में रखता हो किवे उसका सम्मान करें

16-नया चेला न हो

17- परमेश्वर का परिवार के बाहर के लोगों में सुनामी हो

धर्म-सेवक (डीकन) हों जो-

1-अध्यक्ष के समान प्रतिष्ठित व्यक्ति हों

2-दो-मुहे न हों

3-पियक्कड़ न हों

4-नीच कमाई के लोभी न हों

5-विश्वास के भेद को निर्मल विवेक से सुरक्षित रखने वाल हों

6-पहिले परखे गए हों

7-दोषरहित हों

8-एक ही पत्नी का पति हो

9-अपने बच्चों तथा परिवार का अच्छा प्रबन्धक हो

10- धर्म-सेवक के कार्य को अच्छी तरह से पूरा करे

धर्म-सेविकाएं (डीकनेस) हों जो-

1-सम्माननीय हों

2-द्वेषपूर्ण गपशप करने वाली न हों

3-संयमी हों

4-सब बातों में विश्वासयोग्य हों

2-वचन विश्वासयोग्यता से प्रचार किया गया हो।:-

Creation Autonomous Academy

वचन खराई से प्रचार किया गया हो। वचन का सही तरीके से व्याख्यान किया गया हो। प्रचारक वह प्रचार करें जो वचन कह रहा है। प्रचार में परमेश्वर की इच्छा क्या है उसका प्रचार किया गया हो। जो परमेश्वर बताना चाह रहा है वह बताया गया हो।

3-सदस्यता हो।:-

परमेश्वर का परिवार में सदस्यता हो। जिनको सुसमाचार सुनाकर चेला बनाया गया, जो बपतिस्मा ले चुके हैं, उनको परमेश्वर का परिवार सदस्यता आवेदन फार्म भराकर सदस्यता प्रदान की जाए। परमेश्वर का परिवार सिद्धान्त तथा नियम व दस्तूरों को समझ गए हों।

4-संस्कार जांचे गए हों (प्रभु भोज, बपतिस्मा, आदि):-

परमेश्वर का परिवार में संस्कार सम्पन्न हो रहे हों। प्रभु भोज हो रहा हो, बपतिस्में हो रहे हों, बच्चों के समर्पण हो रहे हों, विवाह सम्पन्न हो रहे हों, दफन संस्कार हो रहे हों।

5-अनुशासन हो:-

परमेश्वर का परिवार में परमेश्वर का परिवार अनुशासन हो। अगुवे और सदस्य परमेश्वर का परिवार अनुशासन का पालन कर रहे हों।

सेवा की विश्वासयोग्यता के लिए उपर्युक्त के आधार पर क्षेत्रीय अगुवे द्वारा जांच करके प्रमाणित किया गया हो। यदि उपर्युक्त 5 मांगें पूरी नहीं होतीं तो उसे **"बाइबल अध्ययन का स्थान"** के रुप में माना जाए। जो आगे जाकर कलीसिया स्थापना के रुप में सामने आएगा।

परमेश्वर का परिवार स्थापक:-

कौन हमारे परमेश्वर का परिवार स्थापक होंगे?

- वे पुरुष जिनको हम जानते हैं। जिनको हमने चेला बनाया है।
- वे पुरुष जिनको हमने प्रशिक्षित किया है।
- वे पुरुष जिनके पास हमारे साथ यात्रा का कुछ इतिहास है।

देखें आप किस मौसम में हैं?:-

यह देखना अति आवश्यक है कि हम किस मौसम में हैं।

1-तैयारी का मौसम

- जुताई का मौसम

2-सुसमाचार/वचन प्रचार का मौसम

- बुवाई

3-शिष्यता प्रशिक्षण का मौसम

- देखभाल
- पकी फसल की कटाई
- फसल खलिहान में लाना

4-आंकड़े संग्रहण का मौसम

- फसल मापना
- फसल भण्डार में लाना
- संरक्षण

5-परिणाम देखने का मौसम

- वांछित परिणाम

Creation Autonomous Academy

Bibliography

1. S.D.Ponraj, Kalisiya Sthapna Digdarshika, Mission Educational Books, Lal Garh, Madhupur, Bihar-815353, India, 1995
2. Rev.Moti Lal, Personal Evangelisam, Hindi Theological Literature Committee, 1017, Napier Town, Pili Kothi, Jabalpur-482001, M.P., Seond Edition 2008
3. Rev. Dr. G.R. Singh, Rev. Dr. C. W. David,Major Religions of the World, Lucknow Publishing House, 37, Cantonement Road, Lucknow-226001, U.P.
4. Rev. Christopher A.B. Tirkey, An Introduction to Primitive Religions, Hindi Theological Literature Communittee, 968, North Civil Lines, Jabalpur M.P. 482001, 1992
5. Acharya Daya Prakash Titus, Fulfilment of the Vedic Quest in the LORD Jesus Christ, Masihi Sahitya Sanstha, 70 Janpath, New Delhi-110001, 1987
6. Vikas Maitri, Tribal Society and Culture of Jharkhand, Vikas Maitri, P. N. Bos Compound, Puruliya Path, Ranchi-834001, Jharkhand, 2009
7. Greg Gilbert, What is the Gospel, Crossway, 1300 Crescent Street, Wheaton, Illinois 60187 USA, 2010
8. Thabiti M. Anyabwile, What is a Healthy Church Member, 1300 Crescent Street, Wheaton, Illinois 60187 USA, 2008
9. Dr. Victor Choudhri, The House Church, Padhar, Distt. Betul-460005, Madhya Pradesh, India, 2002
10. Jef Reed, Church a Family of Families, EFI, Deepali Bilding, New Delhi, India, 2007
11. Thomas Bed and Barbara Akils, Prarmbhik Susmachar Prachar, Ashian Sahyogi Sanstha, India, 42 Jail Road, Geeta Vatika, Gorakhpur-273006, U.P., India, 1995
12. S.D.Ponraj, Kalisiya Sthapna, Mission Educational Books, Lal Garh, Madhupur, Bihar-815353, India, 1997
13. www.netbiblestudy.net/evangelism
14. www.amazon.com/The Gospel-Personal-Evangelism
15. www.effective-evangelism-training.org
16. voices.yahoo.com/evangelism21century
17. www.churchplantingvillage.net
18. www.Churchplanting.com

Creation Autonomous Academy

लेखक: डॉ० रामराज डेविड

लोगों को उनकी अपनी संस्कृति के अनुसार सुसमाचार नहीं मिल पा रहा है। आज की आवश्यकता है कि परमेश्वर का परिवार के सभी सदस्यगण सुसमाचार प्रचार करें। यह प्रभु की इच्छा है। भारत में भारतीय विधि से सुसमाचार-प्रचार एवं परमेश्वर का परिवार स्थापना का कार्य किया जाना आवश्यक है।

' परमेश्वर का परिवार ' नामक यह पुस्तक अनेक वर्षों के अध्ययन-अध्यापन के उपरान्त हिन्दी भाषी सुसमाचार प्रचारकों एवं परमेश्वर का परिवार स्थापकों की आवश्यकता के अनुसार तैयार की गयी है।

यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए सरल, रोचक एवं व्यवहारिक है। पुस्तक में उदाहरणों का समुचित प्रयोग किया गया है।

लेखक की इच्छा है कि परमेश्वर का परिवार के सेवकगण सुसमाचार-प्रचार और परमेश्वर का परिवार स्थापना करने हेतु इस पुस्तक का उपयोग करें जिससे सम्पूर्ण भारत में सभी लोगों तक सुसमाचार पहुंच सके और मौखिक संस्कृति के लोगों के बीच भी परमेश्वर का परिवार की स्थापना हो सके।